आपके पत्र

दीवाना का अंक १३ हाथ में आते ही मन खुशी से झूम उठा ! इसमें मोटू-पतलू का लेख बेहद पसन्द आया। भाग तीन, जासूस और बोलती खोपड़ी क रहस्य रोमांचक था !

काका के कारतूस व गरीब चन्द की डाक ने तो कमाल कर दिखाया। दीवाना का हर पेज रंगीन बना देवें ! अगले अंक की इन्तजार में—

नरेन्द्र गुलाटी—शिव पुरी लुधियाना

दीवाना तेज साप्ताहिक मिला, मन में पढ़ने की अजीब सी उत्सकता उत्पन्न हुई और खुशी से पढ़ने लगा।

काका जी के कारतूस, मोटू-पतलू, घसीटा राम ने हंसा कर दीवाने का दीवाना बना दिया।

दीवाना मेरी प्रिय पुस्तक है इसलिए मैं इसे पढ़ने को बहुत बेचैन रहता हूं। इधर कुछ दिनों से यह हमें समय पर नहीं मिल रही।

कृपया इसे समय पर निकालें और आप कुछ खेलों के कार्टून भी दिया कीजिये।

अब दीवाना आपको समय पर मिल रहा होगा। —सं०

एस० पी० आजाद—कलांवाली

दीवाना का अंक १३ प्राप्त हुआ जिसमें मोटू-पतलू के कारनामे, फैण्टम और जंगल शहर, सिलबिल-पिलपिल, चुटकले व ढोल की पोल रोचक व सराहनीय थे। वास्तव में दीवाना की दीवानगी इनके पास ही है। इनके अलावा काका के कारतूस व गरीब चन्द की डाक में अश्लील पत्र न शामिल करें क्योंकि यह पत्रिका मनोरंजन की तो होती ही है दूसरी ओर बच्चों के लिये, जिससे बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। आशा करता हूं आप इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।

जय भगवान भारद्वाज—रिवाड़ी

हम दीवाना को अश्लीलता से दूर रखने

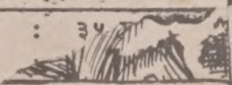
मुख्य पृष्ठ पर

चिल्ली की है अक्ल निराली
कितनी सफाई से मोमबत्ती उठाली
नहीं पता लगा श्रीमती को
लगेगी आग जब बम की बत्ती को
समझ नहीं आयेगी ऐसे
मोमबत्ती बम बन गयी कैसे
न हंसना न कुछ भी कहना
अगर तुमको है सही सलामत रहना।

दीवाना
अंक : १७ वर्ष : १६
१ नवम्बर १९८०

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

वार्षिक चन्दा : ३५
अर्द्ध वार्षिक
एक प्रति



ोई चीज नहीं मांगनी
हिये।

की भरसक कोशिश करते हैं, भविष्य में विशेष ध्यान रखेंगे। —सं

मैं दीवाना का बहुत पुराना दीवाना हूं ! मैं इसे नियमित रूप से पढ़ता हूँ। पहले की तरह इस बार १४वां अंक पढ़ने को मिला ! मोटू-पतलू का लेख, काका के कारतूस, बोलती खोपड़ी का रहस्य व कहानी 'शत्रुता का रहस्य' बहुत पसन्द आई ! अगले व नये अंक की इंतजार में आप का पाठक !

नरेन्द्र कुमार गुलाटी—लुधियाना

दीवाना के नये अंक १४ में मूल्य बृद्धि की सूचना पढ़ी। वास्तव में कीमत तो कागज के कारण दीवाना को बढ़ानी पड़ी है। यह तो सर्वविदित है आशा है आप सामग्री भी रोचक देंगे।

राजेश वर्मा— नई दिल्ली

हास्य पत्रिका 'दीवाना' का १४वां अंक मिला, पढ़कर दिल खुशी के मारे खिल उठा। किस-किस स्तंभ की तारीफ करूं, सभी एक से बढ़कर एक थे। लेकिन गरीब चन्द की कमी खटकी, हमारी तो यही दुआ है कि हास्य पत्रिका 'दीवाना' सभी पत्रिकाओं को पछाड़ कर 'फर्स्ट प्राईज' हासिल करे !

सुरेन्द्र खुराना—मोगा (पंजाब)

मैं दीवाना का नया पाठक हूं। पहले तो कभी कभी खरीदकर पढ़ता था किन्तु कुछ महीनों से मैं इसका नियमित पाठक बन गया हूं। कारण-हास्य व्यंग्य से भरपूर इस पत्रिका का हर स्तम्भ मुझे बहुत पसंद है।

दीवाना एक ऐसी पत्रिका है जो हर बार एक नयापन लिए हमको हंसाए जाती है।

खास कर मोटू-पतलू के कारनामे पढ़कर तो अच्छे से अच्छा आदमी भी पेट दर्द का मरीज बन जाता है।

हां-सम्पादक जी क्या आप पाठकों द्वारा ...हास्य रचनाएं नहीं स्वीकार करते ?

...ान 'दीवाना'—मुरादनगर

... रचनायें भी प्रकाशित की जाती हैं। —सं०

मैं 'दीवाना' का नियमत पाठक हूँ, मुझे सारी पत्रिकाओं में से दीवाना ज्यादा अच्छी लगती है।

दीवाना का अंक १४ मिला। मुखपृष्ठ बहुत अच्छा लगा। इस अंक में मोटू-पतलू, फैण्टम, पचतन्त्र, सिलबिल पिलपिल और बोलती खोपड़ी रोचक लगे। ओ३म मोटर साइकिलायनम: और आंगन की कली ने पत्रिका में चार चांद लगा दिये।

बंद करो बकवास कहाँ गायब हो गई है। कृपया कुछ नये स्तंभ शुरू करें !

योगेन्द्र गुप्ता—ग्वालियर (म० प्र०)

पसन्दीदा हास्य पत्रिका दीवाना का अंक १४ हस्तगत हुआ। मुख पृष्ठ देखकर मन प्रसन्नता से प्रफुल्लित हो उठा ! देवसरे जी की कहानी 'शत्रुता का रहस्य' भी खूब अच्छी लगी। मोटू-पतलू, फैण्टम बेहद पसन्द आए ! इसकी प्रगति के लिए हमेशा दुआ करता हूँ।

तरसेम मोंगा 'टिकू'—न्यू टाऊन

दीवाना का अंक १४ मिला, पढ़ कर दिल खुशी से झूमने लगा ये पढ़ कर तो और भी खुशी हुई कि अब दीवाना का हर नया अंक १५ दिनों के बाद छपने लगेगा। आपने कीमत के बारे में लिखा है, हमें हर कीमत पर दीवाना खरीदना मंजूर है !

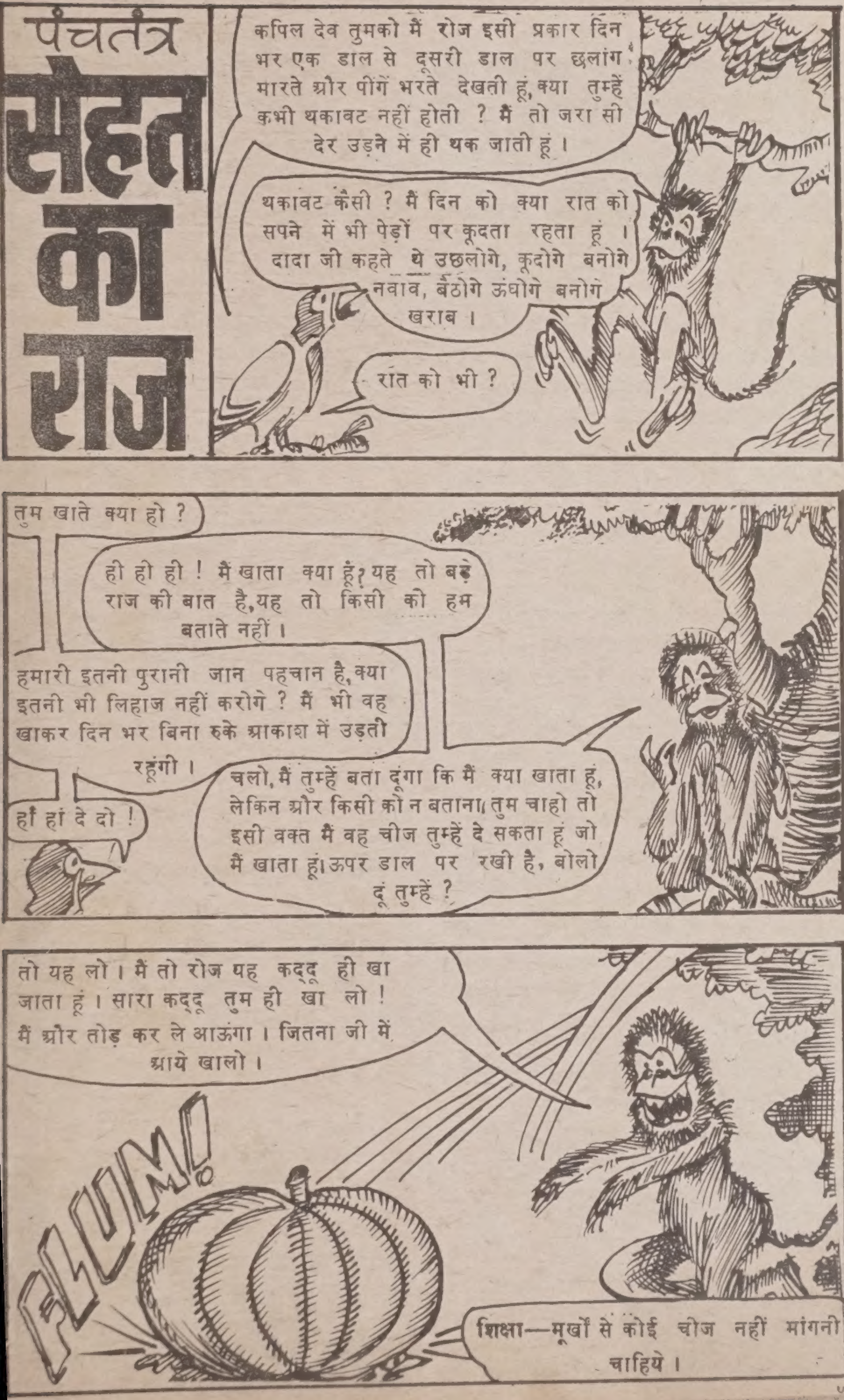
अंक १४ में 'मोटू पतलू', 'सिलबिल पिलपिल' तो बहुत ही रोचक लगे।

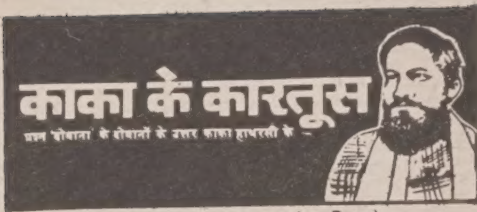
मोटर साईकिल के नए डिजायनों के बारे में आपकी राय अच्छी लगी।

पंत्रतंत्र और आदिमानव अच्छे लगे।

सुरजीत लाम्बा—फरीदाबाद टाऊन




पंचतंत्र
मेहनत का राज
कपिल देव तुमको मैं रोज इसी प्रकार दिन भर एक डाल से दूसरी डाल पर छलांग मारते ग्रौर पींगें भरते देखती हूं, क्या तुम्हें कभी थकावट नहीं होती ? मैं तो जरा सी देर उड़ने में ही थक जाती हूं ।
थकावट कैसी ? मैं दिन को क्या रात को सपने में भी पेड़ों पर कूदता रहता हूं । दादा जी कहते थे उछलोगे, कूदोगे बनोगे नवाब, बैठोगे ऊंघोगे बनोगे खराब ।
रात को भी ?
तुम खाते क्या हो ?
ही ही ही ! मैं खाता क्या हूं? यह तो बड़े राज की बात है, यह तो किसी को हम बताते नहीं ।
हमारी इतनी पुरानी जान पहचान है, क्या इतनी भी लिहाज नहीं करोगे ? मैं भी वह खाकर दिन भर बिना रुके ग्राकाश में उड़ती रहूंगी ।
चलो, मैं तुम्हें बता दूंगा कि मैं क्या खाता हूं, लेकिन ग्रौर किसी को न बताना। तुम चाहो तो इसी वक्त मैं वह चीज तुम्हें दे सकता हूं जो मैं खाता हूं। ऊपर डाल पर रखी है, बोलो दूं तुम्हें ?
हां हां दे दो !
तो यह लो । मैं तो रोज यह कद्दू ही खा जाता हूं । सारा कद्दू तुम ही खा लो ! मैं ग्रौर तोड़ कर ले आऊंगा । जितना जी में ग्राये खालो ।
FLUM!
शिक्षा—मूर्खों से कोई चीज नहीं मांगनी चाहिये ।



आर. के. अग्रवाल, सुन्दरगढ़ (उड़ीसा)
प्र-प्यास बुझाने के लिए पानी के अलावा और क्या चाहिए ?
उ-पानी पीने से बुझे, मानव तन की प्यास;
राजनीति में सताती, सिंहासन की प्यास।

श्याम बाजपेयी, लक्ष्मी बम्हनी बंजर (मंडला)
प्र-सरकारी चीज को लोग मुफ्त का माल क्यों समझते हैं ?
उ-बैठे जनता ट्रेन में, बिना टिकट दिलदार,
जनता हैं हम इसलिए, है अपना अधिकार।

बजरंग शर्मा 'लता', श्रीगंगानगर
प्र-प्रेमी-प्रेमिकाओं में अनबन कब हो जाती है ?
उ-रूप रंग ढल जाय या खाली पाकिट होय,
लड़ते देवी-देवता, दांता-किटकिट होय।

गुरदीप खोखर 'पप्पी', मोगा (पंजाब)
प्र-'जिंदगी उसी की है, जो किसी का हो गया आपका क्या खयाल है काका ?
उ-सीट खाली मिल गई, चादर बिछाकर सो गया,
जिसके डंडे में है दम, अधिकार उसका हो गया।

मदनकिशोर होतवानी, रायपुर (म०प्र०)
प्र-जरूरत से ज्यादा प्यार, नफरत में बदल सकता है क्या ?
उ-अति की भली न बेरुखी, अति का भला न प्यार
अति ही भली न मिठाई, अति का भला न खार

धर्मेन्द्रसिंह, रायल होटल, लखनऊ
प्र-भूख हड़ताल करने वालों के नाम पेपर में छपते हैं लेकिन देश में लाखों भूखे हैं, उनके नाम क्यों नहीं छपते ?
उ-भूखों से भर जायगा, सम्पूरण अखबार,
नेता-भाषण चित्र सब, हो जाएं बेकार।

रमेशकुमार मूंदड़ा, झरसुगुडा
प्र-नेता लोग जिंदगी से कब ऊब जाते हैं ?
उ-पलट जाय दुर्भाग्य से, जब उनकी सरकार,
नींद गई, आदर गया, हुई जिन्दगी भार।
पद विहीन जगजीवनराम।
रघुपति राघव राजा राम॥

शशिभूषणसहाय, बखरी (चम्पारन)
प्र-कारतूस की जिस समय, घुसे नाक में गंध,
हो जाते बेहोश हम, 'दीवाना' के संग।
उ-बेहोशी के बाद जब, आए तुमको होश,
उछल कूद करने लगो, ज्यों उछले खरगोश।

अनिलसिंह, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद
प्र-'प्रेम पियाला पी गया, रहा सनम को रोय',
इसकी दूसरी पंक्ति पूरी कर दीजिए ?
उ-एक और पी जाइए होनी हो सो होय।

केवलप्रकाश दुआ, काशीपुर (नैनीताल)
प्र-खोया हुआ विश्वास, दुबारा कैसे प्राप्त किया जा सकता है ?
उ-अड़े रहो निज आन पर, राखो ऊंचा लक्ष्य,
इन्दिरा संजय गांधी, हैं प्रमाण प्रत्यक्ष।

नरिन्द्रकुमार निन्दी, कपूरथला
प्र-अगर जिद्दी किस्म की प्रेमिका, उल्लू की फरमाइश करे तो ?
उ-उसको लक्ष्मी मानकर, सम्मान आप दिखाइए,
उल्लू की मुद्रा बनाकर, अदब से झुक जाइए।

एम. ए. इराकी, कानपुर
प्र-फूल की हिफाजत कांटे करते हैं, तो हुश्न की ?
उ-दुष्टों के फंदे फंसे, जब कोई खातून,
करें हुस्न की हिफाजत, दांत और नाखून।

मुकेश गुप्ता, तिलकराज, खुरजा
प्र-काका, आपका शिष्य बनने की फीस क्या है ?
उ-नहीं चाहिए दक्षिणा, नहीं चाहिए दान,
थोड़ी श्रद्धा भेजदो, थोड़ा सा सन्मान।

प्रेमबाबू शर्मा, बगीची पीरजी, दिल्ली-७
प्र-कौनसी चीज पैसे से नहीं खरीदी जा सकती ?
उ-कोठी बंगलों में भरी, हों सोने की ईंट,
प्रधान मंत्री की नहीं, मिल सकती है सीट।

घनश्याम मवारना, कांगड़ा
प्र-सुन्दरियों की कमर पतली क्यों होती है काका ?
उ-कुसुम कली सी कामिनी, काहे को कटि क्षीन,
कटि का कंचन काटकर, कुचन मध्य धर दीन।

सुनीलकुमार जैन, सिहोरा (म०प्र०)
प्र-आप अटल बिहारी की पार्टी में शामिल हो सकते हैं क्या ?
उ-वे क्वारे हम विवाहित, कैसे मेल मिलायं,
शादी करलें अटलजी, तो शामिल हो जायं।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश



हा हा हा

● बुजुर्ग युवा सुनील को समझा रहे थे, 'मैं तुमसे कतई खुश नहीं हूं। तुमने कई लड़कियों को धोखा दिया है।'

अफवाह सुनने में आई है कि तुमने इसी मुहल्ले की शीला को शादी का वचन दिया है। लाजपत नगर की कमला से सगाई भी कर ली है। रामा कृष्ण पुरम की प्रीति से चुपचाप मंदिर में शादी भी कर ली है और शाहदरा और सब्जी मंडी में भी तुम्हारी प्रेमिकायें हैं। यह सब क्या है ? कैसे किया तुमने यह सब ?

सुनील बोला, 'मेरे पास मोटर साइकिल है जनाब।'

● एक, 'मैं और मेरी पत्नी एक जमाने में बड़े सुखी और खुशियों से भरे थे।

दूसरा, 'फिर क्या हुआ ?'

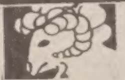
पहला, 'फिर हमने शादी कर ली।'

● एक व्यक्ति ने फिल्म एक्ट्रेस से क्षमा याचना की, 'यकीन जानिये मैं उस दिन यहां था ही नहीं इसलिए आपकी शादी में न आ सका। मुझे माफ कर दीजिए।'

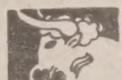
अभिनेत्री बोली, 'कोई बात नहीं। अगली बार जरूर आना।'

आपका भविष्य

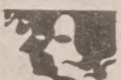
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : यात्रा छोड़ दें, व्यर्थ की परेशानी एवं व्यय, हालात सुधरेंगे और कारोबार भी ठीक चल पड़ेगा, नई योजना पर विचार, यात्रा अचानक, अफसरों से सहयोग, बाधाओं पर विजय, परन्तु अनेक प्रकार के संघर्ष ।



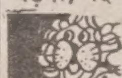
वृष : सफलता मिलेगी, प्रगति की ओर बढ़ेंगे, कठिनाईयां पेश आयेंगी और मानसिक तनाव भी बढ़ेगा, काम रुक-रुक कर बनेंगे, किसी महापुरुष का आसरा रहेगा, कोई महत्वपूर्ण सफलता मिलने से हर्ष, कारोबार आगे बढ़ेगा।



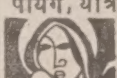
मिथुन : गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे परन्तु कुछ हानि न कर पायेंगे, हालात सुधरेंगे, विशेष व्यय होगा, आपके काम बनते जायेंगे, आर्थिक लाभ अच्छा होगा, कामकाज में व्यस्तता एवं लाभ भी बढ़ेगा, यात्रा न करें, आय होगी ।



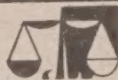
कर्क : कारोबार ठीक, यात्रा सफल, साहस एवं मनोबल में कमी का अनुभव, लाभ अच्छा परन्तु अधिक परेशानी रहेगी, दौड़धूप ज्यादा, सफलता कम, घरेलू कामों में व्यस्तता बढ़ेगी, नई वस्तुओं को खरीदें ।



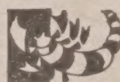
सिंह : पूरा लाभ न उठा सकेंगे, परिश्रम भी बेकार समझें, कारोबार सुधरेगा और आम हालात भी आपके वश में आ जायेंगे, संघर्ष काफी रहेगा, कठिन कामों में भी सफलता पायेंगे, यात्रा अचानक, आत्म विश्वास दृढ़ ।



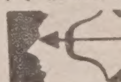
कन्या : प्रयासों में सफलता, काम बन जायेंगे, दौड़धूप अधिक और सफलता कम, व्यय अधिक या धन की कमी अटकेगी, गुप्त शत्रु से बचें, यात्रा न करें शत्रु एवं बाधाओं पर विजय यात्रा में सुख, विशेष व्यय होगा ।



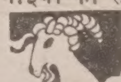
तुला : काम बनने से खुशी परन्तु विशेष व्यय करेंगे, काम काज का बोझ बढ़ेगा और लाभ भी अच्छा मिलेगा, आर्थिक दशा में सुधार होता देखेंगे, यात्रा सफल, सेहत की संभाल रखें, मशीनरी आदि से परेशानी ।



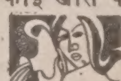
वृश्चिक : दिन संघर्ष पूर्ण हैं फिर भी सफलता मिलती रहेगी, कारोबार से लाभ बढ़ेगा, दशा ज्यों की त्यों, प्रयासों में सफलता मिलेगी, बाधायें दूर होंगी, यात्रा सफल, पर करें सावधानी से, सम्पर्क वालों से परेशान ।



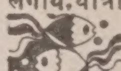
धनु : व्यर्थ की परेशानी, लाभ सामान्य होगा, आलस्य या थकान का प्रभाव, फिर भी प्रयास करने पर सफलता मिल जावेगी, यात्रा हो सकती है, उलझनें सुलझेंगी, कठिनाईयों का सामना, काम बन जायेंगे ।



मकर : व्यय अधिक, नई वस्तुओं की खरीद करेंगे, आर्थिक चिन्ता रहेगी और काम में भी दिल न लगेगा, प्रयास भी बेकार जायेंगे, यात्रा छोड़ दें, हालात सुधरेंगे, यात्रा सफल, कोई खास काम बन जावेगा ।



कुम्भ : कोई अप्रिय घटना होगी, लाभ आशा अनुसार मिलेगा, संघर्ष काफी रहेंगे, धार्मिक उत्सव में रुचि, यात्रा अचानक और सफल, सुख साधनों में वृद्धि, नये काम में पूंजी न लगायें, यात्रा न करें ।



मीन : शुभ फल प्राप्त होने पर भी परेशानी बनी रहेगी, नई योजना के साथ व्यापार बढ़ेगा, सहयोगी संग-संग रहेंगे, कोई विशेष सूचना मिलेगी, आय में वृद्धि होगी, काम काज से लाभ बढ़ेगा, यात्रा सफल ।

मन का जादू

—देवेन्द्र कुमार

बहुत पुरानी कहानी है। तब पेरू में एक शक्तिशाली राजा राज्य करता था। उसका साम्राज्य दूर-दूर तक फैला हुआ था। राजा के संदेश लाने-ले जाने के लिए दरबार में सन्देशवाहकों की एक पूरी टोली काम करती थी।

हुलाची नाम का एक व्यक्ति उस टुकड़ी का मुखिया था। राजा हुलाची पर बहुत विश्वास करता था। अगर राजा को कोई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और गुप्त संदेश भेजना होता तो वह हुलाची को ही सौंपता था।

हुलाची बहुत वीर और दयालु स्वभाव था। शुरू-शुरू में तो सब ठीक-ठाक चला, लेकिन अब उसका स्वभाव ही उसके रास्ते का रोड़ा बनने लगा। हुलाची किसी को दुःखी नहीं देख सकता था। अगर वह रास्ते में किसी दीन-दुःखी को देखता, तो सारा काम-काज छोड़कर उसकी देखभाल में जुट जाता। उस समय वह बिल्कुल भूल जाता था कि राजा ने उसे एक महत्त्वपूर्ण संदेश लेकर भेजा है, जिसे तुरन्त पहुँचाना है। कई बार इस कारण से राजा के संदेश विलम्ब से पहुँचते। इसमें कभी-कभी नुकसान भी हो जाता।

राजा को पता चला तो वह बहुत गुस्सा हुआ। उसने हुलाची को खूब डांटा-फटकारा। चेतावनी दी कि अगर अब कभी संदेश विलम्ब से पहुँचा तो उसे कड़ा दण्ड दिया जाएगा।

हुलाची सिर झुकाए सुनता रहा। लेकिन वह अपना स्वभाव न बदल सका। एक बार वह राजा का सँदेश लेकर जा रहा था तो उसने एक व्यक्ति को बेहोश पड़े देखा। वह वहां रुकने को हुआ, लेकिन तभी उसे राजा की चेतावनी याद हो आयी। वह मन मारकर आगे बढ़ गया। पर सारे रास्ते उसका मन उसे कचोटता रहा।

एक बार हुलाची संदेश लेकर पहाड़ी रास्ते से जा रहा था। आकाश में बादल घिरे हुए थे, वर्षा हो रही थी। तभी उसने एक बूढ़िया को फिसलकर गिरते देखा। उसने झट दौड़कर बुढ़िया को पकड़ लिया। अगर हुलाची समय पर वहाँ न पहुंच जाता तो बुढ़िया हजारों फीट गहरी खाई में गिर जाती।

लेकिन फिर भी बुढ़िया को काफी चोट आयी थी। पत्थर से टकराकर उसका सिर फट गया था और खून बह रहा था। बुढ़िया बेहोश हो गई थी।

हुलाची धर्म-संकट में पड़ गया। अगर बुढ़िया की देखभाल करता है तो सन्देश पहुंचने में विलम्ब हो जाएगा, राजा क्रोधित होंगे। और अगर सन्देश देने जाता है तो देखभाल न होने से न जाने बुढ़िया की क्या दशा हो। वहाँ कोई था भी नहीं, जिसे हुलाची बुढ़िया की देखभाल के लिए छोड़ जाता। हुलाची सोचता रहा, सोचता रहा। आखिर उसने निर्णय लिया कि चाहे जो हो, वह बुढ़िया के स्वस्थ होने के बाद ही आगे जाएगा।

हुलाची ने वहीं बुढ़िया के लिए एक झोंपड़ा बनाया। उसकी मरहम-पट्टी की और जब वह ठीक हो गई तो उसे एक गांव में छोड़कर आगे बढ़ चला। बुढ़िया ने हुलाची को खूब आशीर्वाद दिए।

सन्देश पहुंचने में बहुत देर हो गई थी। हुलाची समझ गया कि राजा इस बार अवश्य दण्ड देंगे और यह हुआ भी। जब राजा को पता चला तो उसने हुलाची को न सिर्फ नौकरी से हटा दिया बल्कि अपना राज्य छोड़कर चले जाने का भी आदेश दिया।

बेचारा हुलाची क्या करता। वह चुप-

चाप राज्य छोड़कर चला गया। वह सारा दिन इधर-उधर फिरता रहता। जंगली फल-फूल खाकर पेट भरता। कहीं किसी दीन-दुःखी को देखता, या घायल जानवर पर नजर पड़ती, तो सब कुछ भूलकर उसकी सेवा में लग जाता।

लेकिन हमेशा तो ऐसा नहीं चल सकता था। हुलाची को कई-कई दिन खाना न मिलता।

एक दिन वह जंगल में घूम रहा था। उसने वहां एक झोंपड़ी देखी। शायद कुछ खाने-पीने को मिल जाए, यह सोचकर वह उस ओर बढ़ चला। जैसे ही हुलाची झोंपड़ी के पास पहुंचा, एक बुढ़िया अन्दर से निकली। यह वही बुढ़िया थी, जिसे हुलाची ने खड्ड में गिरने से बचाया था। बुढ़िया भी उसे पहचान गई। वह हुलाची को झोंपड़ी में ले गई और उसे भर पेट भोजन कराया।

खाना खाते समय हुलाची की आंखों में आंसू आ गए। आज न जाने कितने दिन बाद उसने भर पेट भोजन किया था। बुढ़िया ने पूछा तो हुलाची ने सारी कहानी बता दी।

सुनकर बुढ़िया ने एक जोड़ी चप्पल हुलाची को दीं। बोली, 'बेटा, इन्हें पहन ले।'

हुलाची आश्चर्य से बुढ़िया को देखता रहा। बात उसकी समझ में नहीं आयी थी। बुढ़िया हुलाची के मन की बात समझ गई। मुस्कराकर बोली, 'बेटा, ये चप्पलें उड़ाने वाली हैं। मैं एक जादूगरनी हूं। मैं इतने दिनों से किसी आदमी की तलाश में थी, जो निःस्वार्थ भाव से परोपकार करता हो। तू सचमुच बहुत अच्छा इन्सान है। ये चप्पलें तेरे बहुत काम आयेंगी। इन्हें पहनकर तू जहां चाहे जा सकेगा। जरा भी देर नहीं लगेगी।'

हुलाची जादुई चप्पलें पहनकर बाहर आया। उसने उड़ने की बात सोची तो सचमुच वह हवा में उड़ने लगा। यह देख वह बहुत प्रसन्न हुआ और बुढ़िया को धन्यवाद देकर वापस चल दिया।

अब हुलाची फिर राजा के पास पहुंचा। राजा से कहा कि उसे फिर से नौकरी पर रख लिया जाए। अब वह बिल्कुल ठीक-ठीक काम करेगा। राजा हुलाची को अच्छा आदमी समझता था। उसका गुस्सा भी उतर चुका था। उसने हुलाची को फिर से नौकरी पर रख लिया।

हुलाची उन जादुई चप्पलों की मदद से पलक झपकते ही सन्देश यहां से वहां पहुंचा देता था। इससे राजा बहुत खुश हुआ।

एक दिन हुलाची सन्देश लेकर उड़ा जा रहा था। एकाएक उसने नीचे देखा—

शेष पृष्ठ ३४ पर



मोटू पतलू

पिछले दिनों घसीटा राम की भेंट एक षडयंत्र वैज्ञानिक प्रोफेसर जीरो से हो गई थी। प्रोफेसर जीरो ने एक ऐसी एक्शन हाई पावर गन का निर्माण किया था जिसकी शक्ति शाली किरणें किसी भी बड़ी चीज को छोटा कर सकती थीं। उस गन से घसीटा राम ने मोटू पतलू और चेला राम को रबड़ की गुड़ियों जितना छोटा बनाकर एक जूते के डब्बे में कैद कर लिया था। और उन्हें प्रोफेसर की प्रयोगशाला में ले आया था। चेला राम का बालिश्तिया दोस्त अंगूठा नन्द घसीटा राम के कपड़ों में छुप कर वहां पहुंच गया था। इसके बाद के घोटाले आगे हंसते रोते चित्रों में देखिये।








हम अपनी सुपर एक्शन हाई पावर गन से सड़क पर खड़ी कारों को माचिस की डिब्बी जितना छोटा बनायेंगे और अपनी जेबों में भर कर घर ले आयेंगे।
यह तो बहुत मामूली बात है माई डीयर बदमाश, जो मैंने तुम्हें पहले बताई थी। इससे हम बड़े-बड़े प्रोफेसरों को डाक्टरों को, जजों को, बड़े-बड़े फिलम स्टारों को छोटा बना कर बुद्धिजीवों का सफाया कर देंगे।
हम अभिताम बच्चन को छोटा करके जया भादुड़ी के पर्स में डाल देंगे।
देश और विदेश के बड़े-बड़े नेताओं को छोटा कर देंगे। इसके लिये हर देश दूसरे देश को दोषी ठहरायेगा। फिर एटमी युद्ध होगा। सब वैज्ञानिक मारे जायेंगे।
यह वैज्ञानिक प्रोफेसर जीरो भी मारा जायेगा। बाकी बचेगा घसीटा राम दी ग्रेट।
क्या सोच रहे हो ? मैं भी मारा जाऊंगा ? तुम बदमाश तो हो ही, घटिया और कमीने भी हो।
अरे बाप, यह तो मैं भूल ही गया था कि तुम में दूसरे का दिमाग पढ़ने की शक्ति है।
अब तक अंगूठा नन्द घसीटा राम के कपड़ों से बाहर निकल कर उस कमरे में पहुंच चुका था, जहां मेज पर रखा जूते का डिब्बा फाड़ कर मोटू पतलू बाहर निकल आये थे और पुलिस को फोन कर रहे थे।
हैल्लो हैल्लो। पुलिस स्टेशन ? क्या कहा मुर्दघाट से बोल रहे हैं ? सौरी, रांग नम्बर।
राँग नम्बर के भाई, इस नम्बरदार को देख
इतना मोटा चूहा !


कितने खतर नाक हैं इसके दांत, हमें बालूशाही की तरह खा जाएगा।
मियाऊं ··· मियाऊं।
बिल्ली की आवाज सुनकर चूहा भाग गया।
पर यह बिल्ली कौनसा रहम करेगी हम पर, हम तीन चूहों को देखकर इसने उस एक चूहे को छोड़ा है।
कुत्ते की आवाज सुनकर बिल्ली भाग गई है।
भौंभौंभौं भौं
अब कुत्ता आएगा तो वह कौनसा हमें बख्श देगा।
हैल्लो, हैल्लो। हम शमशान घाट से बोल रहे हैं। क्या काम है?
एक मुर्दा उठवाना है लावारिस मर गया है।
मुर्दा उठाने वाले कहां भेजें?
घसीटा राम के घर चान्दनी चौक पीपल वाली गली में कुये के सामने मकान है उसका।
भगवान करे मुर्दा उठाने वालों के पहुंचने से पहले किसी तरह घसीटा राम मर जाये।


टेलीफोन की डोरी पर चढ़ता हुआ अंगूठा नन्द भी मेज पर पहुंच गया।
जैसे मैं डोरी से ऊपर आया हूं ऐसे ही तुम नीचे उतर आओ और यहां से भाग लो।
भागेंगे कहां। यहां बच कर निकल भी गये तो सड़क पर किसी के पांव तले कुचले जायेंगे या किसी मोटर के नीचे आजायेंगे या गली के कुत्ते हमें फाड़ खायेंगे।
वह देखो हमारा मित्र अकलमंद उल्लू हमारी सहायता को भी आ पहुंचा। इसकी कमर पर बैठकर यहां से निकल चलो।
ठहरो। पहले हमें यहां एक और हिसाब साफ करना है। जरा सामने से वह यंत्र तो उठा लाओ माई डियर उल्लू।
लो संभालो।
अब जरा रस्सी का वह गोला भी उठा लाओ।
ठीक है ऐसे ही दरवाजे का निशाना बनाये रखो। कदमों की आहट से लगता है कि वह दोनों अंदर आने वाले हैं।
उनका अनुमान ठीक था, जैसे ही प्रोफेसर और घसीटा राम अन्दर आये मोटू पतलू ने पूरा जोर लगा कर गन का ट्रिगर दबा दिया।


ग्रौर दूसरे ही पल गन से निकली सुपर एक्शन हाई पावर किरणोंनेप्रोफेसरग्रौर घसीटा राम को बेंगन के बराबर छोटा बना दिया ।
हमारा हथियार हमी पर चला दिया । बेड़ा गर्क हो गया ।
भागो यहां से ।
भागोगे कहां । माईडियर उल्लू ! पकड़ लाग्रो इन करेलों को ।
उल्लू ने झपट कर प्रोफेसर को पकड़ लिया.
लो सम्भालो इसको ।
फिर मेज के नीचे घुसे घसीटा राम को घसीट कर बाहर निकाला ।
ग्रौर सब ने मिलकर दोनों को रस्सियों से जकड़ दिया ।
ग्रब बोलो बच्चू । हमारी ग्रांखों में नीम्बू का ग्रचार डाल रहे थे ।
चलो ग्रब इन दोनों को भी उल्लू पर लाद कर यहां से उड़ चलो ।



बलबूते से एक दूसरे को पकड़ कर बैठे रहना। कोई भी यहां से फिसल कर गिर गया तो उसकी हड्डी पसली का पता नहीं पायेगा।
ठीक कह रहे हो। इस बात पर तुम कहो तो मैं प्रोफेसर और घमीटा राम को लात मार कर नीचे गिरादूं?
थोड़ी ही देर में यह सब डाक्टर झटका के यहां पहुंच गये।
खोलो इन के बन्धन! यह हालत कैसे हो गई
यह बाद में बतायेंगे। पहले तुम फोन करके पुलिस को बुलालो।
पुलिस के आने में अधिक देर नहीं लगी।
इन्स्पैक्टर साहब इन्हें गिरफ्तार कर लो।
पर इनका अपराध क्या है? तुम सब इतने छोटे कैसे बने हुए हो?
यही इनका अपराध है। इन्होंने ऐसा यंत्र बनाया है, जो बड़े आदमियों को छोटा बना देता है। वह यंत्र इनके गुप्त ठिकाने पर है। उस ठिकाने का पता यह खुद बता देंगे।
ठीक है। बाकी हम इनसे उगलवा लेंगे।
इन्स्पैक्टर इन्हें लेकर पुलिस स्टेशन की ओर चल दिया।
अरे यह हमें क्या हो रहा है?



दूसरे ही पल में सब बड़े होकर पहले जैसी हालत में आ गये।
अरे कमाल हो गया। हम सब पहले जैसी हालत में आ गये बड़ी खुशी की बात है।
बड़े दुख की बात है। मुझे तुम पर जो डाक्टरी के प्रयोग करने थे उनका क्या बनेगा?
दूसरी ओर पुलिस स्टेशन पहुँच कर इंस्पैक्टर रिपोर्ट लिख रहा था।
अब बताओ, सीधी तरह अपना पता ठिकाना बताते हो या डंडा उठाऊँ?
तभी उन दोनों पर से भी किरणों का असर समाप्त होने लगा।
और ये दोनों भी बड़े होकर अपनी असली हालत में आ गये।
मौका गनीमत है। नजर बचाकर खिसक लो।
आप कौन हैं? क्या कोई रिपोर्ट लिखवाने आये हैं?
और नहीं तो क्या फोटो खिचवाने आये हैं?
अरे···! अभी यहां बैंगन जितने छोटे दो अपराधी बैठे थे। वे कहां गये? क्या तुमने मेज के नीचे कूदते देखा है उन्हें?



घसीटाराम की हालत पर आपको अब भी रोना न आया हो तो इस जोकर से आगामी अंक में फिर मिलिए।

दीवाना वर्ग पहेली जीतिये

संकेत

बायें से दायें

१. बिना अर्थ समझे पंछी की तरह घोटा मार ! (६)

६. बार-बार मंगाने वाला दुकानदार ! (२)

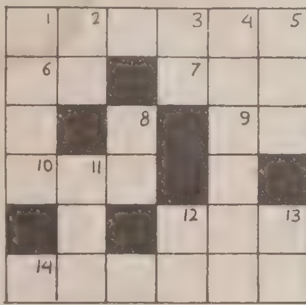
७. चिड़िया दोस्त से मिली तो कैसी हवा चल पड़ी ! (३)

९. वह जो आपके सामने है ! (२)

१०. हो सकता है बे अन्त शायरी के बाद अन्तिम शब्द जुड़े ! (२)

१२. बुझा-रगड़ाई में से बुराई निकाल दी तो लड़ाई हो जायेगी ? (३)

१४. और अधिक गहरा अंधेरा या काले बादल ! (६)



इनाम २० रु०

अन्तिम तिथि १५-११-८०

ऊपर से नीचे

१. अस्थिर स्वभाव का पलपल का वजन। (२,२)

२. बद करने के लिए इसे लगाइये ! (२)

३. उबटन में उनसे नांद उलट गयी ? (२)

४. इन्साफ के दृष्टिकोण से वाजिब ! (६)

८. समंदर की लहरों का धीमापन ! (२)

११. विश्वास करोगे इसके आने पर। (३)

१२. पानी जैसे नीचे गिर ! (२)

१३. टहनी डाल कविता में। (२)

नाम ______

पता ______

______

शीर्षक प्रतियोगिता

पुरस्कार ५ रुपये



दिये गये चित्र के आधार पर आप केवल एक वाक्य में सुझाइये कि चिल्ली मास्को ओलम्पिक के प्रतीक चिन्ह मीशा भालू से क्या दीवानी बात कह रहा है कि मीशा की आंखें चमक उठी हैं। सबसे दीवाने सुझाव को पुरस्कार।

______

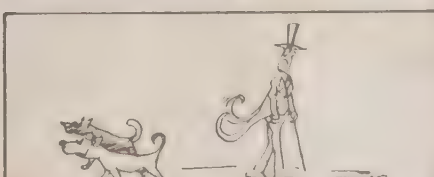
______

नाम ______

पता ______

______

अन्तिम तिथि १५-११-८०




दिवाली में दिवाला
जादूगर गोंगिया पताशा से जादू के खेल देखिए। विदेशों तक इसके जादू की धूम है।
मैं दिवाली के अवसर पर अपनी क्लब के लिए आपके जादू के खेल की शो बुक करने आया हूं। क्या आप मुझे अपने किसी खास जादू का कोई नमूना दिखा सकते हैं?
आज ही मैं एक थेटर में अपने जादू के खेल दिखा रहा हूं। उसमें एक आईटम है, आदमी का सर काटने की। आप दर्शकों में बैठने की बजाय स्टेज पर आकर मेरे इस खेल का कमाल देखिए। आप मान जायेंगे मेरे हाथ की सफाई को।
मैं जरूर स्टेज पर आकर देखूंगा, धन्यवाद
स्टेज पर।
अब सर काटने वाली आईटम आ गई है। हमारे शो की बुकिंग के लिए क्लब का सैक्रेट्री आने ही वाला है।
मैं बड़ी तेजी और सफाई से तुम्हारा सर काटूंगा। सर कटने और मरने के बाद, तुम कुछ देर बिना हरकत किए पड़े रहना। इस तरह सीन में जान पड़ जाएगी।
क्लब का सैक्रेट्री आ रहा है। मैं जरा जल्दी से तैयार हो जाऊं।

मिसेज माथुर जो कि पास बैठा सब कुछ देख रही थीं, राजू के इस विचार से सहमत हो गई, क्योंकि उन्हें किसी भी चीज के टूटने से सख्त नफरत थी। उन्होंने तीनों लड़कों को छुट्टी दे दी, और कहा कि चाहें तो वे अपनी मीटिंग इत्यादि कर सकते हैं।

कुछ समय पहले राजू, महिन्दर और श्याम ने पहेली हल करने वालों का एक क्लब बनाया था। उसी को बाद में उन्होंने छोटे जासूसों की फर्म में बदल दिया। इस फर्म को वे 'तीन जासूस' के नाम से पुकारते थे। परन्तु राजू की आन्टी मिसेज माथुर ये मानने को तैयार न थीं कि छोटे लड़के कोई गुत्थी सुलझाने में समर्थ होंगे। तीनों लड़के मनोरंजन के लिये पहेली इत्यादि हल अवश्य करते थे, परन्तु सबसे अधिक आनन्द उन्हें रहस्यमयी गुत्थियां सुलझाने में ही आता था। मिसेज माथुर को पता था कि राजू ने अपने मित्रों की सहायता से पिछवाड़े में एक वर्कशाप बना रक्खी है, जिसके चारों ओर पुरानी ईंटों तथा दूसरे पुराने सामान के ढेर लगे हैं ताकि वो वर्कशाप दिखाई नहीं देती। परन्तु उन्हें ये बिलकुल मालूम नहीं था कि वर्कशाप के साथ ही तीनों मित्रों ने एक पुराने ट्रेलर को खड़ा कर अपना जासूसी का हैडक्वाटर भी बना रक्खा है। इस हैडक्वाटर के लिये प्रयोग में लाया गया ट्रेलर मि०-माथुर ने लड़कों को दिया था क्योंकि पुराने सामान के साथ खरीदे गये इस ट्रेलर को वे बेच न पाये थे।

'तीन जासूसों' के इस हैडक्वाटर में प्रिंटिंग प्रेस, टेलीफोन इत्यादि सभी सुविधायें थीं। इस ट्रेलर को भी लड़कों ने माथुर साहब के ट्रक ड्राइवर हँस तथा कुणाल की सहायता से तरह-तरह के पुराने समान से चारों ओर से पूरी तरह छुपा रक्खा था। इस ट्रेलर में घुसने के लिये लड़कों ने कुछ गुप्त रास्ते बना रक्खे थे, हैडक्वाटर में हर प्रकार की सुविधा का लड़कों ने पूरा प्रयास किया था। इसके एक भाग में उन्होंने एक मेज, टेलोफोन, टेपरिकार्ड, फाइलें रखने की अलमारी इत्यादि आवश्यक सामान रक्खा था तो दूसरे भाग में फिल्म धोने का एक अन्धेरा कमरा बना रक्खा था। लगभग सारा ही सामान मि० माथुर के पुराने सामान के साथ ही आया था, जिसे तीनों लड़कों ने ठीक-ठाक कर प्रयोग में लाने लायक कर लिया था।

तीनों मित्र हैडक्वाटर की ओर जाने ही वाले थे कि मि० माथुर सामान से लदे अपने दूसरे ट्रक के साथ भीतर आये, ट्रक ड्राइवर हँस ट्रक चला रहा था। उसका मित्र कुणाल पीछे बैठा था। मि० माथुर

शेष पृष्ठ ४६ पर



दीवाना दिवाली जुआ गाइड

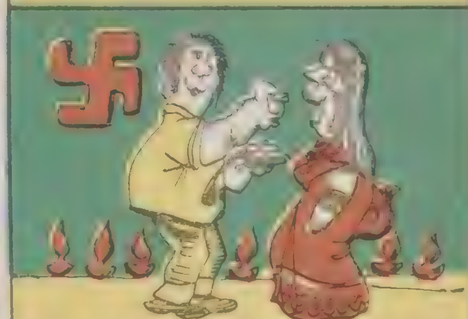
दिवाली पर जुआ खेलने के शौकीन पाठकों के लिए हम यहां बाकायदा गाइड छाप रहे हैं। आप गाइड के नियमों पर अमल करके अपनी दिवाली सफल बना सकते हैं। हार को जीत में व जीत को हार में बदल सकते हैं।



जुआ खेलने जाते समय थैला जरूर ले जायें, जीतने पर नोट ढोने के काम आयेगा और कपड़े उतर जाने पर (चित्र की तरह) तन ढकने के काम आयेगा।



अपने मकान के ड्रेनेज पाइप में जुआ खेलने जाते समय एक बीस का नोट छुपा जायें। वापिसी में- जुए में पैसे हार कर आने पर टैक्सी वाले को किराया देने के काम आएगा।



दिवाली के उपलक्ष में जुआ खेलने जाने से पहले बीबी को अफीम वाली बर्फी खिलादें। रात को उसके जेवर उतारने में कोई मुश्किल पेश नहीं आएगी।



ताश के रंगों के डिजायन वाली शर्ट पहन कर जुआ खेलें। कुछ ताश के पत्ते आप गोद में छुपायेंगे तो जल्दी ही नजर नहीं आयेंगे।



धारियों वाले डिजाइन का टी शर्ट भी ठीक रहेगा। धारियों में ताश के इक्के खोंसे जा सकते हैं।

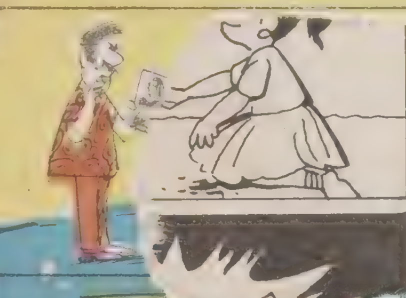


जुये के अड्डे पर जाते हुए आपने नौकर को सिखा जायें कि वह बाथरूम की खिड़की के साथ सीढ़ी लाकर लगाकर रख दे। आप जीत जायें तो बाथरूम जाने के बहाने बाथरूम से सीढ़ियों के सहारे उतर नौ दो ग्यारह हो सकेंगे। (जुआरी जीते खिलाड़ी को जाने नहीं देते)



जिस घर में आप जुआ खेल रहे हैं और हार रहे हैं वहां से आते समय गिलास चम्मच दरवाजे का नॉब वगैरह जो दाव में लगे छुपाकर ले आयें। भागते चोर की लंगोटी ही सही। गिलास और चम्मचों से जलतरंग बजाकर आप गम का गाना गाकर गम भी हल्का कर सकते हैं।

जुआ खेलने वालों को अपनी बीबी की बीस वर्ष पहले की फोटो दिखायें और उसे जरूरत पड़ने पर दाव पर लगा लें। हारने पर भी आपकी जीत होगी। एक मुसीबत से छुटकारा मिलेगा।

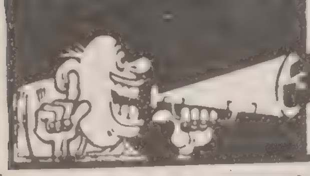




दिवाली के पहले बीबी को भूतों की कहानियां सुना-सुना कर पक्का करलें ताकि बाद में आप दिवाली को जुये में लुट पिटकर बाल बिखेरे, आंखों के चारों ओर काले डोरे डाले भुतहा शक्ल लेकर आयेंगे तो वह डरे नहीं।



जुये में आप हार गये तो घर जाते समय पुलिस को फोन करें और वह जगह बतादें जहां जुआ चल रहा है। आपसे पैसा जीतने वाले अन्दर हो जायेंगे और आपके दिल को शांति मिलेगी।



आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें

प्रह्लाद जसवानी, कृष्ण कन्हैया—मण्डला : चाचा जी, आज कल भरोसा किस पर करना चाहिये ?

उ० : खुद पर और खुदा पर ।

एम० एस० गुजराल—करनाल : चाचा-जान, क्या ख्वाब हकीकत से ज्यादा रंगीन होते हैं ?

उ० : कम से कम हमारे बारे में तो यह सत्य है, क्योंकि ख्वाबों में हेमा नजर आती है और हकीकत में हमारे बच्चो की मां ।

[illegible]—देहरादून : चाचाजी, [illegible] अब कितने बाल [illegible] ाह करने की



[illegible] कर चुके हैं, [illegible] है ।

[illegible] कॅट : सिगरेट की डिब्बी पर [illegible] है कि सिगरेट पीना स्वास्थ के लिए हानिकारक है, फिर भी लोग सिगरेट क्यों पीते हैं ?

उ० : जीवन के सफर को 'शोर्टकट' से जल्दी पार करने के लिए । इसके लिए एक शायर ने कहा है—

यूं तो सफ़र हयात का बेहद तबील था,
मैं मैकदे की राह से होकर गुज़र गया ।

रवीन्द्रनाथ सरीन—लुधियाना : जिन्दगी और मौत में क्या अंतर है ?

उ० : आजकल जैसे-जैसे महँगाई बढ़ती जा रही है, आम आदमी की जिन्दगी और मौत में कोई अंतर नहीं रह गया है ।

मुकेश भटनागर 'निराला'—किला चित्तौड़-गढ़ : डीयर अंकल, दुनिया पैसे की दीवानी है आप किसके दीवाने हैं ?

उ० : हमारे बारे में कौन नहीं जानता, डेढ़ रुपये का दीवाना है ।

पंडित मेवालाल परदेशी—महोबा : क्या आपका विवाहित जीवन सफल है ?

उ० : जहाँ तक 'फसल' का सम्बन्ध है, सफल है ।

मक्खनसिंह—हनुमानगढ़ : आंखों के अंधे और प्यार के अंधे में क्या अंतर है ?

उ० : आंखों का अंधा आदमी लाठी से रास्ता ढूंढ़ता है, प्यार का अंधा दूसरों की लाठी से अपना सर फुड़वाता है ।

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : अंकल भगवान ने आपको नाखून दिये हैं या नहीं ?

उ० : दिये हैं दूसरों के सर के लिये ।

धनेश—नई दिल्ली : किसी की हत्या करना पाप है तो डी० डी० टी० छिड़क कर मच्छरों की हत्या क्यों की जाती है ?

उ० : दूसरों का खून चूसने वालों का खून बहाना पाप नहीं है ।

सुन्दरकुमार साह—कलकत्ता : गरीबचन्दजी के घर का पता क्या है ?

उ० : जो आपके घर का पता है । देश भर में कोई ऐसा घर नहीं, जहां गरीबचन्द का बिल न हो ।

अशोक भोतयाल—जालंधर : क्या आप बता सकते हैं कि दुनिया में सब से बड़ा प्यार कौन से रिश्ते में है ?

उ० : चाचा भतीजे के रिश्ते में ।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


दिवाली है, दिल वालों की
तुमने इतने सारे पटाखे लें लिए और मुझे यह छोटा सा राकेट ही दिया है।
छोटे बच्चों के लिए यही काफी है।
तुम दूसरों के चलते पटाखे देख कर मजा लो।
चलो यूं ही सही।
धड़ाम
अपना तो मैने छोटा सा राकेट ही चलाया है, और तुम्हारा कहना माना है

आवाज पटाखों की

कभी खास खास मौकों पर पटाखे बड़ी मतलब भरी सार्थक आवाज करते है वही हम यहां बताते हैं। मतलब समझिये जो न समझे वह अनाड़ी है।



झाड़ू लगाने वाली के पीछे पटाखा बजने पर

संगीतज्ञ के सामने रॉकेट छोड़ने पर

भैंस के आगे पटाखा चलाने पर

किसी युवती के पास चलाने पर

नेता के सामने चलाने पर

किसी भावी दामाद के भावी ससुराल के पास से गुजरते समय पटाखा चलाने पर


बच्चों के सूखा रोग
की प्रसिद्ध दवा
लाल तेल
बच्चों के दाँत
सरलता से
निकलते हैं।
निर्माता:– लाल तेल फार्मेसी उन्नाव, यू० पी०
दिल्ली में हमारे डीलर्ज :—
कान्ती लाल आर. पारिख, चांदनी चौक, दिल्ली-६
गोपाल कैमिकल क़म्पनी, तिलक बाजार, दिल्ली-६
दो रीयल कैमिकल कम्पनी, ३२२,
खारी वावली, दिल्ली-६
रत्तनलाल जगजोत सिंह, १९६७, खारी बावली दिल्ली-६

पृष्ठ १० से आगे

एक आदमी एक चट्टान पर खून से लथपथ बेहोश पड़ा था। हुलाची आगे न जा सका। उसने वहीं उतरकर उस आदमी की मरहम-पट्टी की, फिर आगे बढ़ा।

इस बार सन्देश पहुंचने में फिर देर हो गई थी। राजा ने फिर उसे बुरा-भला कहा। हुलाची ने मन-ही-मन निश्चय किया कि वह अपने काम-से-काम रखेगा, किसी ओर नहीं देखेगा और खाली समय में ही दीन-दुखियों की सहायता का काम करेगा।

एक दिन हुलाची एक जंगल से जा रहा था, तभी न जाने क्या हुआ, उसने देखा वह जमीन पर खड़ा है। वह उड़ते-उड़ते एकाएक धरती पर उतर आया था। हुलाची ने फिर से उड़ने की इच्छा की, लेकिन कई बार इच्छा करने के बाद भी वह उड़ा नहीं। उसी जगह खड़ा रहा। हुलाची ने सोचा, शायद जादुई चप्पलों का प्रभाव जाता रहा। वह खड़ा.खड़ा सोच ही रहा था कि तभी वही बुढ़िया वहां आयी। उसे देखते ही हुलाची ने सब कुछ बता दिया।

सुनकर बुढ़िया ने सिर हिला दिया। बोली, 'बेटा, ऐसा कभी नहीं हो सकता। ये चप्पलें तो बहुत चमत्कारी हैं। ला, मैं देखूं, क्या बात है।'

बुढ़िया ने चप्पलें स्वयं पहनीं तो वह आकाश में उड़ने लगी। यह देखकर हुलाची चक्कर में पड़ गया। यह मामला क्या था। उसने बुढ़िया से चप्पलें लेकर पहनीं, लेकिन वह नहीं उड़ सका।

फिर तो कई बार ऐसा हुआ। बुढ़िया ने जब भी चप्पलें पहनीं वह आकाश में उड़ने लगी और हुलाची उड़ने में सफल नहीं हुआ।

यह देख बुढ़िया बोली, 'बात मेरी समझ में नहीं आ रही है कि यह रहस्य क्या है?'

तभी हुलाची की नजर सामने गई। उसने देखा, एक गाड़ी के नीचे एक घायल कबूतर पड़ा हुआ है। वह दौड़कर वहां पहुंचा उसने कबूतर के मरहम-पट्टी कर दी।

और इस बार जब उसने चप्पलें पहनीं तो वह एकदम आकाश में उठ गया।

हुलाची तुरन्त नीचे उतर आया। उसने चप्पलें बुढ़िया के सामने रख दीं। बोला, 'अम्मा, ये उड़ने वाली चप्पलें तुम्हें ही मुबारक हों।'

'क्यों, बेटा?' बुढ़िया ने पूछा।

'अब मैं समझ गया हूं कि मैं पहले क्यों नहीं उड़ पा रहा था और अब कैसे उड़ सका। असल में चप्पलें तो ठीक हैं। खराबी मेरे मन में ही है।' हुलाची ने कहा।

बुढ़िया चुपचाप उसकी बात सुन रही थी।

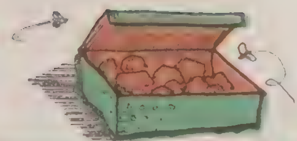
हुलाची कहता गया, 'सामने घायल कबूतर पड़ा था और मैं उसे छोड़कर उड़ जाना चाहता था। इसलिए मेरे मन ने मुझे रोक दिया। तेरी जादुई चप्पलें भी मन के सामने बेबस हो गईं। मेरा मन उस घायल कबूतर की आवाज सुन रहा था। यही कारण था कि कबूतर के ठीक होते ही, चप्पलों का जादू वापस आ गया। इसलिए मैं तो इनके बिना ही ठीक हूं। आज मैं समझ गया हूं कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं वही करूंगा। और उस काम के लिए मुझे इन जादुई चप्पलों की कोई आवश्यकता नहीं है।'

सुनकर बुढ़िया हंस पड़ी। बोली, 'बेटा, तूने ठीक कहा। मन के जादू के सामने हर जादू बेकार है। तू दीन-दुखियों की सेवा कर, उसी जादू से तुझे सुख मिलेगा।'

बस, उस दिन से हुलाची ने सारे काम छोड़ दिए। वह दीन-दुखियों की सेवा करता हुआ घूमने लगा। कहते हैं हुलाची आज भी अमर है। ●

दिवाली चिपकियां





इन्हें मिठाई के डिब्बों पर चिपकाइये और मजा लीजिए,

इस डिब्बे को आगे अपने
किसी रिश्तेदार को पकड़ाइए
दीवाना

क्वालिटी गारंटी
इन मिठाइयों को चींटियों ने पास करके
ए ग्रेड सर्टिफिकेट दिया है।
दीवाना

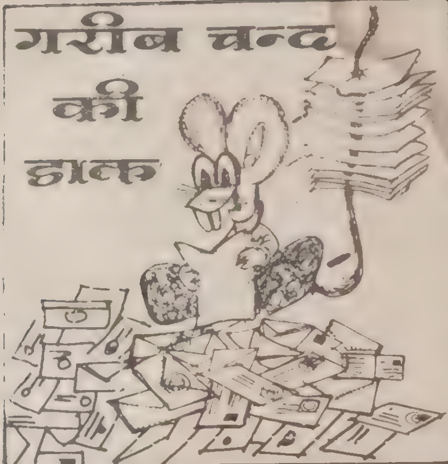
**शुद्ध देशी घी
की मिठाइयां**

**ये मिठाइयां
फीकी हैं**
चीनी अपने राशन की
मिलाकर रक्खें।
दीवाना

**देश की मिट्टी का
आदर करो**
[illegible]
दीवाना

अपने [illegible]
[illegible] कराइए
[illegible]
दीवाना

[illegible]
दीवाना



चन्द्रशेखर गोस्वामी—हरिद्वार : गरीब चन्द जी आप हमारी डाक सामग्री को अपना भोजन क्यों नहीं बनाते ?

उ० : मुझे डाक्टर ने मीठा खाने से मना कर रखा है और आप लोगों के पत्रों में मीठी-मीठी बातें होती हैं।

वजीर अख्तर हैदर—अलीगढ़ : मैं बेकार हूं क्या आप मुझे अपनी कार दे सकते हैं।

उ० : ले लीजिए मेरा इंकार।

उमेश ज्ञानचंदानी—बिलासपुर : डियर गरीबचन्द, कृपया आप अपनी प्रेमिका का पता बताइये।

उ० : वह मेरे दिल में रहती है और मेरा पता आपके पास ही है।

दिनेश चन्द्र सिंघल—निजामाबाद : संसार एक नदिया, दुःख सुख दो किनारे हैं तो इन्सान क्या है ?

उ० : उसमें हिचकोले खाता एक बेपेंदे का लोटा।

अभिमन्यु मिश्रा—सिधौना : गरीब चन्द भाई मैंने आपको कितने पत्र भेजे पर एक का भी जवाब नहीं दिया, पत्र आप खा तो नहीं जाते हैं ?

उ० : जब खाने के लिए धोखा और रिश्वत जैसी बढ़िया चीजें मिल रहीं हैं तो पोस्टकार्ड कौन खाता है।

पवन कुमार चोपड़ा—कालका (हरियाणा) : गरीब चन्द जी, अगर कोई गरीब को दो चार आना दे तो क्या उसकी भूख मिट जाएगी ?

उ० : आजकल आने-पाई बाजार में नहीं चलते। भूख मिटने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

धर्मेन्द्र गोयल—गांधी नगर : गरीब चन्द जी, दिल के जख्म चौराहे पर दिखाने का अंजाम ?

उ० : मजमेबाज बनने के गुण मौजूद हैं। आगे चलकर ताकत की दवाइयां और बच्चा जमूरा वाले मजमे लगाकर अच्छे पैसे कमायेगा।

नरेश कृष्णानी—रायपुर : क्या आप वास्तव में गरीब हैं ?

उ० : पहले आप यह बताइये कि क्या आप सचमुच कहीं के नरेश हैं ?

संजीव बाली 'बिट्टू'—पहाड़गंज, देहली : श्री गरीबदास जी, आपके हमसफर देश के कुल अन्न का दसवां हिस्सा चट करते आ रहे हैं कहीं आप उनके साथ मिलकर यह कुकर्म तो नहीं कर रहे।

उ० : उनके साथ नहीं हूँ। मैं तो अकेला बैठा यही स्कीम बनाता रहता हूँ कि बाकी के नौ हिस्से किस तरह चट करूँ ?

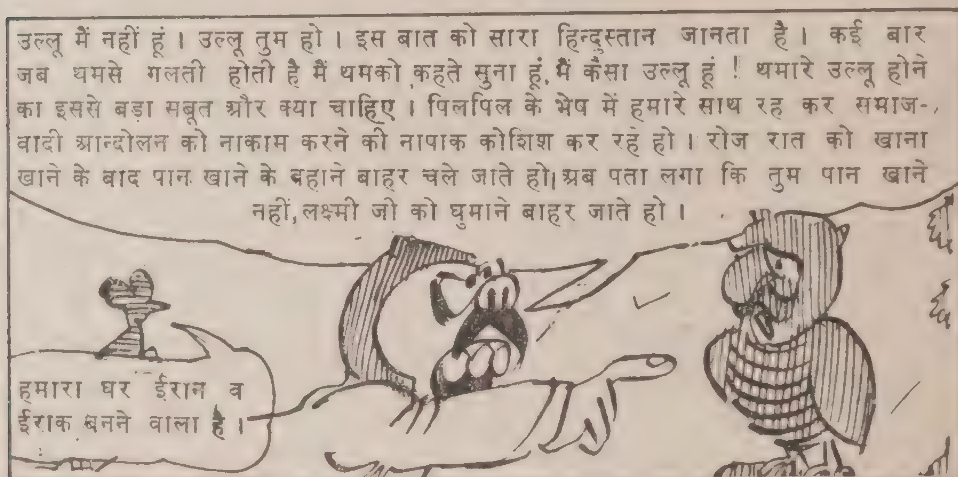
मनोज अरोड़ा—रिवाड़ी : डीयर गरीब चन्द, अगर जबानी एक जलता शोला है। तो बुढ़ापा क्या है ?

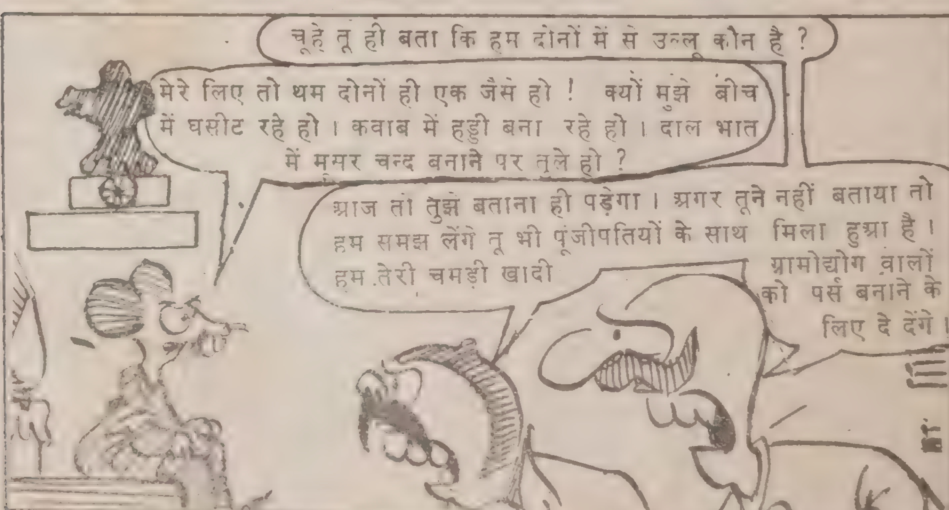
उ० : बुढ़ापा उससे भी भयंकर आग है। वह एक ज्वालामुखी है जो युवक-युवतियों को रोमांस लड़ाते देख जलन के मारे फट पड़ता है।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२


सिलबिल-पिलपिल
गधा कौन?
ओहो, आज तक मैं घनघोर अन्धेरे में झख मारता रहा, गुलशन फन्दा के नावल पढ़ता रहा। दुनिया के असली भेद का पता तो मुझे इस पुस्तक को पढ़ने के बाद ही लगा है।
कौन-सी किताब है यह ? घासलेट विद्या ?
यह पुस्तक है समाजवाद का उजाला। इसमें समझा रखा है कि पूंजीपति किस तरह गरीबों का खून चूस रहे हैं। उनका शोषण कर रहे हैं।
सरकार, व्यवस्था और सारा सामाजिक ढांचा पूंजीपतियों की मदद कर रहा है। अमीर, पिस्ते वाला आइसक्रीम खा रहा है और गरीब, गंडेरिया चूस रहा है। इस साजिश में धन की देवी लक्ष्मी भी शामिल है, तभी तो वह सिर्फ अमीरों के घर ही जाती है। इस बार मैं पूंजीपतियों की पिट्ठू लक्ष्मी का दिमाग ठिकाने लगा कर ही रहूंगा।
क्या करेगा तू ?
अपने साथ तू राजनारायण को भी शामिल कर, जोड़ी अच्छी रहेगी।
जिस जहाज में दीवाली को लक्ष्मी जी की सवारी आयेगी, उसे मैं हाईजेक कर लूंगा और तब तक नहीं छोड़ूंगा जब तक वह गरीबों की गरीबी दूर नहीं कर देंगी।
उल्लू की ? क्या सचमुच लक्ष्मी जी उल्लू की सवारी करती है ?
लक्ष्मी जी तो उल्लू की सवारी करती हैं, जहाज की नहीं।
शायद देवलोक में भी ईरान व ईराक की लड़ाई से पैट्रोल की कमी हो गई होगी, तभी देव लोग उल्लू, हंस, चूहे और भैंसें, बैल वगैरह की सवारी करने लगे हैं। एनर्जी क्राइसिस माई बॉय।


अच्छा तो तू हमें बेवकूफ बना रहा है ? दिखाने के लिए समाजवाद की बातें कर रहा है।पूंजीपतियों की गाड़ियों के पहियों से हवा निकाल रहा है लेकिन अन्दर ही से लक्ष्मी जी के साथ मिलकर षडयन्त्र रच रहा है—गरीबों की पीठ में जंग लगा छुरा घोंप रहा है। तू गद्दार है।
क क क्या मतलब ? मैं गद्दार कैसे हुआ ?
लक्ष्मी जी उल्लू की सवारी करती हैं और तू भी उल्लू है ! हमारी आंखों में धूल झोंक कर लक्ष्मी जी को कंधे पर बिठा कर घुमाता है। गद्दार कहीं का।


उल्लू मैं नहीं हूं। उल्लू तुम हो। इस बात को सारा हिन्दुस्तान जानता है। कई बार जब थमसे गलती होती है मैं थमको कहते सुना हूं, मैं कैसा उल्लू हूं ! थमारे उल्लू होने का इससे बड़ा सबूत और क्या चाहिए। पिलपिल के भेष में हमारे साथ रह कर समाजवादी आन्दोलन को नाकाम करने की नापाक कोशिश कर रहे हो। रोज रात को खाना खाने के बाद पान खाने के बहाने बाहर चले जाते हो।अब पता लगा कि तुम पान खाने नहीं,लक्ष्मी जी को घुमाने बाहर जाते हो।
हमारा घर ईरान व ईराक बनने वाला है।


चूहे तू ही बता कि हम दोनों में से उल्लू कौन है ?
मेरे लिए तो थम दोनों ही एक जैसे हो ! क्यों मुझे बीच में घसीट रहे हो। कबाब में हड्डी बना रहे हो। दाल भात में मसर चन्द बनाने पर तुले हो ?
आज तो तुझे बताना ही पड़ेगा। अगर तूने नहीं बताया तो हम समझ लेंगे तू भी पूंजीपतियों के साथ मिला हुआ है। हम तेरी चमड़ी खादी ग्रामोद्योग वालों को पर्स बनाने के लिए दे देंगे।


थम दोनों ने मुझे धर्म संकट में डाल दिया। जज की कुर्सी पर बिठा दिया। अब तो इन्साफ करना ही पड़ेगा।
मौके के हालात और गवाहों के बयानों पर गौर करने के बाद अदालत इस फैसले पर पहुंची है कि तुम दोनों में से एक उल्लू जरूर है और दूसरा गधा। कौन सा उल्लू है और कौन सा गधा यह फैसला करने के लिए अदालत एक उच्च अधिकार प्राप्त जाँच कमेटी के गठन की सिफारिश करती है।
मैं और सब कुछ हो सकता हूं लेकिन गरीब मजदूरों का दुश्मन उल्लू नहीं हो सकता। मैंने समाजवाद पर रिसर्च वैसे हो थोड़े ही किया है। चूंकि हम दोनों में से एक गधा व एक उल्लू है इसलिए मैं ही वह गधा हो सकता हूं। गधा गरीब मेहनतकश जनता का प्रतीक है। अगर मैं उल्लू होता तो तुझे खा न गया होता ?
खाया तो मुझे पिलपिल ने भी नहीं। कोई और सबूत पेश करो।
दीवाना के सारे पाठक जानते हैं कि मैं ही गधा हूं। इनमें से कई जांच आयोग के सामने बयान देने को भी तैयार होंगे।
नहीं, यह झूठ बोलता है। गधा यह नहीं, मैं हूं। यह तो उल्लू है, गधा कैसे हो सकता है। एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं। अपनी जान बचाने के लिए ही यह स्वयं को गधा कह रहा है। पूँजीपतियों के षडयन्त्रों का कोई अन्त है। गधा तो मैं हूं।
काश मेरे पास गधे की दो वेकेंसियां होतीं तो दोनों को गधा रख लेता लेकिन नौकरी एक ही है और उम्मीदवार दो हैं। दोनों की बराबर की सिफारिश है। क्वालीफीकेशन भी दोनों की एक जैसी है। बड़ा टफ कम्पीटीशन है।



सिलबिल-पिलपिल के नए कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

हंसना मना है

● बचाव वकील और सरकारी गवाह में खूब खींचतान हो रही थी। सरकारी गवाह पुलिस मेन था। वकील उसे शब्दों के जाल में उलझाने की कोशिश कर रहा था। वकील ने दलील दी, 'मेरा मुवक्किल बीच सड़क पर घुटनों के बल झुका हुआ था, यह भी माना। लेकिन कोई आदमी घुटनों के बल सड़क पर झुका होने पर ही शराब के नशे में धुत्त कैसे माना जा सकता है?'

पुलिस मेन बोला, 'लेकिन आपका मुवक्किल बीच सड़क पर घुटनों के बल झुक कर सड़क पर लगी सफेद लायन को अपने हाथ में लपेटने की कोशिश कर रहा था।'

● एक करोड़पति संग्रहालय देखने गया। वहां उसने जेब से सिगार निकाला और लगा लिया। चौकीदार तुरन्त उसके पास आया, 'साहब यहाँ सिगरेट पीना मना है। पांच रुपये तक जुर्माना हो सकता है।'

करोड़पति ने जेब से दस का नोट निकाला और उसे पकड़ाया, 'यह लो पांच रुपये जुर्माना काट लो।'

चौकीदार बोला, 'साहब मेरे पास टूटे पांच रुपये नहीं हैं।'

करोड़पति ने जेब से एक सिगार निकाला और अपने बॉडी गार्ड को दिया, 'लो यह तुम पी लो। हिसाब बराबर हो जायेगा।'

● एक मित्र को दूसरा पट्टियों में बंधा नजर आया! उसने पूछा, 'क्यों भाई ये चोटें कैसे लगीं?'

दूसरा, 'पिछले दिनों घुड़सवारी सीख रहा था। एक दिन ऐसा हुआ कि घोड़ा एक ओर जाना चाहता था और मैं दूसरी ओर...।'

'फिर...?'

'फिर क्या! घोड़े ने टॉस करने का फैसला किया और सिक्के की जगह मुझे उछाल दिया।'

● एक किसान के खलिहान में आग लग गई। वह बीमा कम्पनी के पास बीमे की रकम मांगने गया। कम्पनी वालों ने बताया, 'हम नकद पैसे नहीं देंगे। जैसे आपका खलिहान था ठीक वैसा ही दूसरा बना देंगे।'

किसान चीखा, फिर आप मेरी बीबी का बीमा कैंसल कर दो।'

● एक रेगिस्तान में तेल कम्पनी का तेल शोधक कारखाना था। वहां के दफ्तर ने मुख्य आफिस को पत्र लिखकर शिकायत की कि यहां पानी की बड़ी तंगी है। फौरन प्रबन्ध करें।

कम्पनी का प्रेजीडेंट बोला, 'हूंह ये लोग हमेशा कुछ न कुछ शिकायत करते ही रहते हैं।'

पी०ए० ने कहा, 'सर इस बार शिकायत सच्ची लगती है। पत्र वाले लिफाफे पर टिकट पिन से नत्थी किया हुआ है।'

● दो नेता समुद्रतट पर घूम रहे थे। देखा कि कुछ बालक केकड़े पकड़-पकड़ कर एक बाल्टी में डालते जा रहे थे। बाल्टी पर ऊपर से ढक्कन न था। नेता लोग निकट पहुंचे तो एक नेता बालकों से बोला, 'अरे बाल्टी पर ढक्कन तो रखो! कोई केकड़ा ऊपर चढ़कर निकल भागे तो?'

एक लड़का बोला, 'आप चिन्ता न करें, ये केकड़े नेताओं की तरह होते हैं। अगर एक ऊपर चढ़ने की कोशिश करेगा तो दूसरे उसे खींचकर नीचे गिरा देंगे।

दिवाली बुलेटिन

(अच्छी खबर-बुरी खबर)



फायदेमन्द खबर

दिवाली के जुये में मैं जीत गया। साथ में जितने बैठे थे उन सब की जेबें खाली कर दीं।

लगे हाथ नुकसानदेह खबर भी सुनिये

मेरे साथ जुआ खेलने वाले सब मेरे ही दफ्तर के सीनियर अफसर थे और आजकल मेरे विरुद्ध कई इन्क्वारियां चल रही हैं। वह बदला लेंगे।

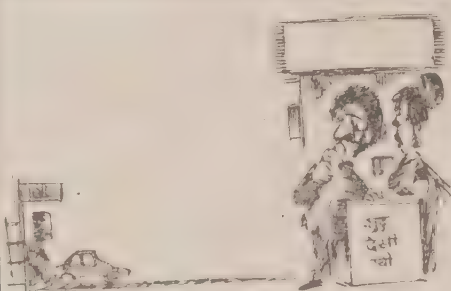


दुर्घटनापूर्ण खबर यह है

कि मेरे दोस्त अख्तर के हाथ में पटाखे चलाते समय चोट आई व हाथ काटना पड़ा। शुक्र है कि यह हादसा बायें हाथ के साथ हुआ। दायां काम करने वाला हाथ तो बचा।

उम्मीदों पर पानी फेरने वाली खबर यह है कि

अख्तर कव्वालियों में तालियां बजाने का काम करता है। एक हाथ से ताली कैसे बजायेगा।



सेहत बनाने वाली

खबर यह है कि मेरी बीबी को दिवाली के लिए देशी घी का टीन सस्ते भाव पर मिल गया है।

साथ ही बुरी खबर यह है

कि जिसने घी बेचा उसको एक दिन मैंने पेट्रोल पम्प पर बीस किलो ग्रीस खरीदते देखा था।



पहले खुशखबरी

मेरे चाचा मेरे लिए बाजार से फुलझड़ियां लाने गये हैं।

अब बुरी खबर

चाचा हास्य कवि हैं, पिछली दिवाली को पटाखे लेने गये थे और अपनी गर्ल फ्रेन्डस को लेकर लौटे थे। पता नहीं अब के क्या करेंगे?



फड़कती खबर यह है

कि बम के डर से हड़बड़ा कर एक हसीना मेरी बाहों में आ गिरी और मुझ से लिपट गयी।

और कड़की वाली खबर यह है

कि जब वह चली गई तो मुझे पता लगा कि उसके साथ मेरा बटुआ भी चला गया है।



आग लगाती खबर यह है

कि मेरे पड़ौस के मकान में दिवाली की रात आग लग गई।

मनोरंजन करने वाली खबर यह है

कि उस मकान में आतिशबाजी के सामान का स्टॉक था। मुहल्ले भर के लड़कों ने मुफ्त में बिग साइज आतिशबाजी का तमाशा रात भर देखा।

दीवाना-कैमल रंग भरो प्रतियोगिता नं० १५ का परिणाम

प्रथम पुरस्कार—याहुल सैम्युल, बी-१/१५, जनकपुरी नई दिल्ली-५८

द्वितीय पुरस्कार—कुमारी वन्धना सक्सेना द्वारा श्री जे. पी. सक्सेना, पत्रकार नई दुनिया सारंगपुर।

तृतीय पुरस्कार—जोगिन्दर शांडिल्य, मकान नं० २६३, नीला महल, जालन्धर शहर।

कैमल आश्वासन पुरस्कार

१. बहादुर सिंह तुरखेड़ी—मंडी गोविन्द गढ़, पटियाला, २. हरी सिंह—नवगांव, फुर्रुखाबाद, ३. संजीव कुमार—बेगमपुर, पटना, ४. अमरलाल बीरवानी—इन्दौर, ५. सुधीर पांचाल—जंगपुरा, नई दिल्ली।

दीवाना आश्वासन पुरस्कार

१. नन्दनी कुमारी—दरियागंज, नई दिल्ली, २. अफक अहमद—साहिब गंज, बिहार, ३. दर्पण—गोल मार्केट, नई दिल्ली, ४. अभय कुमार अग्रवाल—सरगुजा (म० प्र०), ५. मुहम्मद इरफान—शाहदरा, दिल्ली।

सर्टीफिकेट

१. विनीत कुमार—जामनगर, २. दिनेश कुमार शर्मा—आगरा, ३. संजीव कुमार गुप्ता—लाजपत नगर, नई दिल्ली, ४. नारायण झावरी बंधमारे—बाड़मेर (राज.), ५. चन्दर शेखर कश्यप—नागपुर (महाराष्ट्र), ६. कुंवर सुहास चन्दर कान्त—जलगांव, ७. परदीप कुमार साहू—सोहागपुर (म० प्र०), ८. अजय भटनागर—मारवाड़ (राज०), ९. मिलन कुमार किशन राव घानडेव—अकोला, १०. संदीप कुमार कटारिया—फाजिलका (पंजाब)।

अंक नं० १३ में प्रकाशित पहचानिये प्रतियोगिता का परिणाम : फिल्म-वक्त की दिवार, कलाकार सुलक्षणा पंडित और प्रीति गांगुली।
विजेता : मोहम्मद जहांगीर-रांची

पृष्ठ २३ से आगे

बड़ी-बड़ी मूंछों वाले एक छोटे कद के आदमी थे। ट्रक के रुकते ही कुणाल कूद कर बाहर निकला, पास ही बैठी मिसेज माथुर ने ट्रक में भरे सामान पर नजर डाली। ट्रक में अधिकतर बिना सिर और हाथ पैर के लोहे के फ्रेमों से बने पुतले भरे थे। जो कि सिलाई करते समय स्त्रियों द्वारा कपड़ा फिट करने के काम में लाये जाते थे। परन्तु सिले-सिलाये कपड़ों का चलन बढ़ने के साथ-साथ ही, इन पुतलों का प्रयोग इक्का-दुक्का लोग ही करते थे। मिसेज माथुर इन्हें देखते ही भड़क कर बोलीं—'माथुर तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है, जो कि ये पुतले खरीद कर लाये हो, पूरा ट्रक भरे इन बेकार ढांचों को कैसे बेचने की आशा करते हो'?

बिना परेशानी अनुभव किये माथुर ने उत्तर दिया, 'किसी न किसी काम आ ही जायेंगे'। माथुर साहब अपनी ही किस्म के पुराना सामान खरीदने वाले व्यक्ति थे। जो भी वस्तु उन्हें पसन्द आ जाती थी बिना संकोच खरीद लेते थे, चाहे बिकने वाली हो या न हो। परन्तु जैसे-तैसे सब को ही अच्छे नफे से बेच लेते थे।

राजू के अंकल मि॰ माथुर ने राजू से इन ढांचों को काम में लेने के विषय में सोचने को कहा। राजू ने तुरन्त उत्तर दिया, 'निशानाबाजी सीखने के लिये लक्ष्य के काम में आ सकते है।' सुनकर अंकल ने राजू की सराहना की तथा कोई और उपयोग सोचने को कहा, इतने में माथुर साहब की दृष्टि बाग में रक्खी प्लास्टर की प्रतिमाओं पर पड़ी, प्रसन्न होकर वे बोले—'आज मैंने कैसी कलापूर्ण वस्तुएं खरीदी हैं।' तुरन्त ही उनकी पत्नी मिसेज माथुर बोलीं, 'पहले तो मैं हैरान थी आखिर इनका होगा क्या? परन्तु अब मैं सोचती हूं कि लोगों के बागों में फूल पत्तियों और झाड़ियों के बीच रक्खी ये प्रतिमायें अनोखा सौंदर्य बिखरायेंगी।'

'मुझे पता था मैं तुम पर भरोसा कर सकता हूं। तुमने बिलकुल ठीक ही सोचा है। हँस और कुणाल ध्यान से उतारो, देखो कोई किरक न जाये'। ऐसा कह कर मि॰ माथुर छाया में बैठकर पाइप पीने लगे।' ये प्रतिमायें मैंने पहाड़ियों में एक कैनियन से खरीदी हैं। एक विशाल पुराने घर के मालिक के देहान्त के बाद सब कुछ बिक गया, फरनीचर, कालीन इत्यादि मेरे वहां पहुँचने से पहले ही बिक चुके थे। केवल ये प्रतिमायें, कुछ किताबें, एक धूप घड़ी और बाग में इस्तेमाल करने का कुछ फरनीचर ही बचा था, मैंने ये सब का सब ही खरीद लिया'। इसके बाद माथुर साहब कुछ चुप हो गये। तीनों मित्र राजू, महिन्दर और श्याम चुपके से खिसक गये और अपने हैडक्वाटर में पहुंच गये। वर्कशाप में बैठ ठंडी सांस लेकर महिन्दर ने कहा, 'राजू मैंने सोचा था आज तुम्हारी आँटी हमें पूरे दिन ही काम में लगाये रक्खेंगी।' राजू ने उत्तर दिया, 'अवश्य ही लगाये रखतीं यदि उन्हें प्रतिमाओं के गिर कर टूटने का डर न होता। आंटी को नुकसान से बहुत



चिढ़ है।' महिन्दर बोला, 'अब क्या करें कोई गुत्थी सुलझाने को तो है नहीं, आओ

पुराने भूतई शहरों के नक्शे निकाल कर उन्हें देखते हैं, कभी उनकी खोजबीन करने अवश्य जायेंगे'। श्याम ने सुझाया क्यों न उस प्रतियोगिता का हल ढूंढ़ा जाये जिसके इनाम में दो लोग काशमीर की सैर को जा सकते हैं।

'अच्छा' राजू बोला, इतने में ही प्रिंट करने वाले प्रेस के उपर लगा, लाल बल्ब जल उठा।' अरे ! टेलीफोन बज रहा है, हो सकता है, किसी को कोई गुत्थी सुलझवानी हो ?' महिन्दर प्रिंटिंग प्रेस के पीछे से ग्रिल को उठा कर २ नं० की टनल से होकर पीछे के ट्रेलर की ओर गया। राजू और श्याम पीछे-पीछे हो लिये, बड़े पाइप से बनी टनल २ के दूसरे सिरे पर लगे ढक्कन नुमा दरवाजे को उठाकर ये अपने ट्रेलर के हैडक्वाटर में पहुँच गये।

टेलीफोन को बजते देखकर राजू ने झपट कर उठा लिया। 'हैलो ! मैं राजू बोल रहा हूँ' 'एक मिनट में दूसरी ओर से किसी महिला का स्वर सुनाई दिया, 'शहर के प्रसिद्ध जासूस श्री राणादे आप से बात करेंगे।' राणादे का नाम सुनते ही राजू चौकन्ना हो गया। राणादे ने राजू का अभिवादन कर कहा, 'मेरे विचार से तुम अधिक व्यस्त तो नहीं हो, मेरे पास एक नवयुवक बैठा है, जिसे सहायता चाहिये, मेरे विचार से तुम और तुम्हारे मित्र ही इसकी सहायता करने में सबसे उपयुक्त हो।'

'हमें सहायता करने में प्रसन्नता होगी' राजू ने तुरन्त उत्तर दिया। 'आपके मित्र की समस्या क्या है ?'

'कोई मेरे मित्र के लिये विरासत में कोई मूल्यवान वस्तु, छोड़ गया है परन्तु कठिनाई ये है कि इसे ये मालूम नहीं है कि वह वस्तु क्या है तथा कहाँ है ? यदि तुम कल सुबह दस बजे मेरे दफ्तर में आ जाओ, तो वह इस विषय में तुम्हें सब जानकारी दे देगा।'

श्री गणेश की समस्या

महिन्दर जो कि सारा वार्तालाप सुन रहा था, उछल कर बोला 'बहुत खूब ! राणादे हमें फिर से नई गुत्थी दे रहे हैं। एक लड़के को कोई मूल्यवान वस्तु विरासत में मिली है, परन्तु वस्तु क्या है तथा कहां है कुछ मालूम नहीं, काफी गड़बड़ मालूम पड़ती है।'

'जितनी गड़बड़ हो उतना ही अच्छा', राजू बोला।

'राणादे के दफ्तर जाने के लिये हमें कार की जरूरत पड़ेगी। इतने बड़े जासूस के दफ्तर ट्रक में जाना बिलकुल अच्छा नहीं लगता। मैं मोडर्न आटो एजेंसी को फोन करता हूं कि बरखासिंह को बड़ी गाड़ी लेकर हमारे पास कल सुबह साड़े नौ बजे भेज दें'। कुछ समय पहले राजू ने एक प्रतियोगिता जीती थी जिसके इनाम में इन्हें बड़ी कार तथा ड्राइवर की सेवा प्राप्त हुई थी। इस बड़ी कार से इनके जासूसी कार्य में बहुत सहायता मिली थी क्योंकि बड़े शहरों में हर जगह बहुत अधिक दूरी पर होती है, और इन लड़कों को ये दूरियां पार करने में काफी कठिनाई उठानी पड़ती थी। ये ठीक है कि कभी-कभी ये राजू के अंकल की कबाड़ ढोने वाली ट्रक तथा हँस कुणाल के साथ भी जाते थे, परन्तु राणादे प्रसिद्ध जासूस के आफिस जाने लिये पुराने ट्रक का प्रयोग बहुत ही ओछा सा लगता।

'हैलो।' राजू टेलीफोन में बोला, 'क्या मैं मैनेजर से बात कर सकता हूं ? हैलो मि० गणेश मैं राजू माथुर बोल रहा हूं, मैं आपको बताना चाहता हूं कि मुझे कल सुबह साढ़े नौ बजे बड़ी कार की आवश्यकता है। कृपया बरखासिंह को मेरे पास भेज दीजिए।'

'परन्तु मुझे खेद है, ये सम्भव नहीं है,



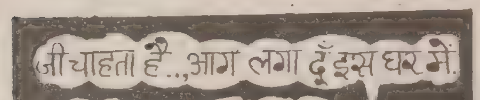
क्योंकि तुम्हारा प्रतियोगिता के अनुसार तीस दिन कार प्रयोग करने का समय समाप्त हो गया है।' महिन्दर निराश होकर बोला—'हमने समय का ध्यान ही नहीं रक्खा, तीस दिन तो तभी समाप्त हो गये थे, जब हम पूर्व की ओर स्कैलटन आइलैंड की गुत्थी, सुलझाने गये थे।'

परन्तु राजू टेलीफोन में फिर से कुछ बोल रहा था। 'मि० गणेश मेरे हिसाब से तो अभी कुछ समय बाकी है। 'तीस दिन अभी पूरे नहीं हुए हैं।'

'परन्तु तीस दिन पूरे हो गये हैं' महिन्दर ने राजू से कहा 'वह ठीक ही कह रहा है।'

राजू ने किराये की गाड़ियों के मैनेजर से फिर बात शुरू की।

'मुझे खेद है आप गलत कह रहे हैं।' उसने दृढ़ता से कहा।



'मि० गणेश मुझे लगता है हमारे विचार में कुछ भेद है, अभी बीस मिनट में आपके दफ्तर पहुंचकर ठीक से बात कर लेते हैं।'

'बात करने को कुछ भी नहीं है।' नाराज होकर उन्होंने कहा, 'समय समाप्त हो गया है, आजाओ परन्तु इसका कोई लाभ होने का नहीं है।'

'धन्यवाद' राजू बोला। तीनों जल्दी से अपनी साइकिलें निकालकर वहां पहुंचे।

'परन्तु वह ठीक ही कह रहा है।' महिन्दर ने दोहराया।

'तीस दिन आखिर तीस दिन ही होते हैं' कहते-कहते वो टनल-२ से बाहर निकला। राजू चुप रहा तथा तीनों साइकिलें लेकर गेट से बाहर निकले। लगभग आधा मील दूर जाने के बाद, बायीं ओर नीला समुद्र दिखायी देने लगा। पानी पर दूर-दूर तक फैली किश्तियां बिन्दुओं के समान दिखायी दे रही थीं। खास सड़क के एक ओर कोने में, किराये पर मोटर देने वाली फर्म का दफ्तर दिखायी दे रहा था। तीनों मित्रों ने साइकिलें एक ओर खड़ी कीं, और दफ्तर की ओर बढ़े। महिन्दर और श्याम राजू के पीछे अनमने रूप से जा रहे थे। तुरन्त ही तीनों मित्रों को मैनेजर के दफ्तर में भेज दिया गया, जिसका इन्हें देखते ही माथा चढ़ गया।

'अच्छा' वह राजू से बोला—'तुमने हमारी प्रतियोगिता जीती और हमारी गाड़ी को तीस दिन प्रयोग में लाने का अधिकार जीता, जो हमने तुम्हें दिया। अब ये तुमने कैसे समझ लिया की कार तुम इस्तेमाल ही करते रहोगे? क्या तुम्हें गिनती भी नहीं आती?'

'हां श्रीमान' राजू बोला 'मैंने गिनती बिल्कुल ठीक-ठीक करने का प्रयास किया है।'

राजू ने अपनी जेब से एक डायरी निकाली जिसमें से एक छोटा सा कागज का पुर्जा निकाला, ये एक विज्ञापन था जिस पर लिखा था।

'रोल्स रायस का प्रयोग जीतो'
'ड्राइवर समेत तुम्हारी
तीस दिन के लिये

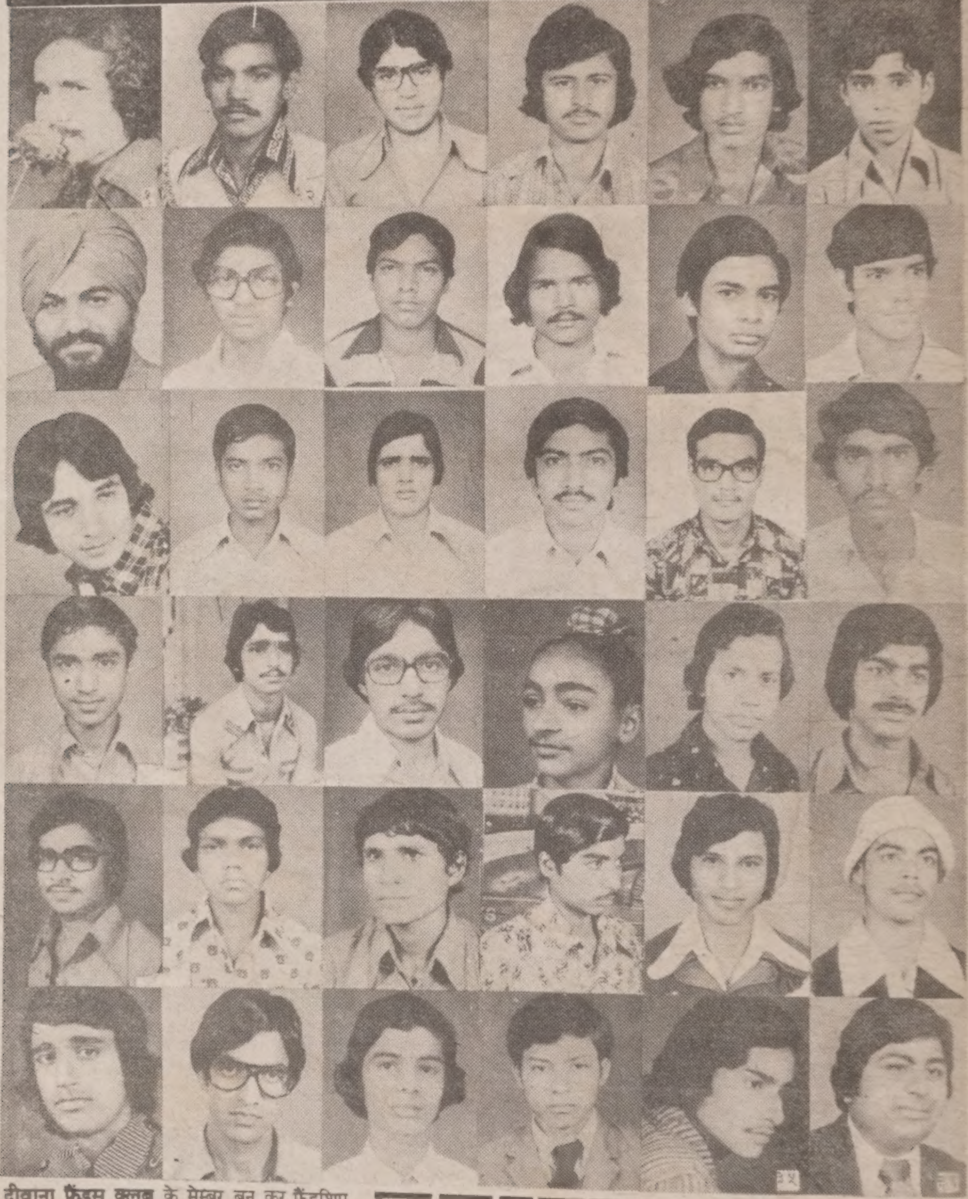
शेष पृष्ठ ५४ पर


फैण्टम-जंगल शहर
दक्षिण चलो, समुद्र की तरफ।
हां दक्षिण चलेंगे।
देखो वो गये ...हमें ऐसे ढूंढ़ रहे हैं जैसे भूसे के भंडार में सुई।
हां, बिलकुल ठीक कहते हो कैप।
यहां तक तो ठीक किया कैप, जैसे तुमने जेल से भगाया, मगर अब क्या?
आराम से बोलो होंकी!
तुम दोनों बकवास बन्द करो। अब हम चमकते हुये खजाने के पास जायेंगे!
कैप! तुमने यह सब पागल आदमी के कहने से ही किया?
पागल आदमी? मैं......
शान्त रहो जोको हमें बहुत काम करना है!
कोई तिजारी नही...कोई बन्दूकें नही...कोई पुलिस नहीं...केवल हमारी। बस...एक लकड़ी का डिब्बा सोने से भरा हुआ।
मैंने पहले भी बहुत दूर की बाजियां लगाई हैं
मगर, अगर तुम धोखा दे रहे हो जोको तो मैं तुम्हें उस डिब्बे में बन्द कर दूंगा
अरे...वह पहाड़! बिलकुल आदमी जैसा लगता है।
फैण्टम का सिर, हम बहुत आगे आ गये, गहरे जंगल की तरफ वापिस चलो।
जहरीले बौनों और चलते फिरते भूत के देश में
जोको अपनी जंगली बातें बन्द करो।
"फैण्टम की एक हजार आंखें हैं"...जगल की पुरानी कहावत है।
आदमी चिड़िया फैण्टम खोपड़ी के पास!
बोलते हुये ड्रम खबर सब जगह पहुंचा देते हैं।
आदमी चिड़िया फैण्टम खोपड़ी के पास
पूरे रास्ते गहरे जंगल में खोपड़ी गुफा तक!
आदमी चिड़िया फैण्टम खोपड़ी के पास।
!
यह रहा मेरा गांव..
...और सोना!
सोना! हम चार दीवारी के बिलकुल बीच उतर सकते हैं।


सो रहे हैं।
तुम कब वापस आओगे अंकल वाकर ?
जल्दी-से-जल्दी रेक्स
आदमी चिड़िया फेण्टम खोपड़ी के पास।
चुराया हुआ हैलीकॉप्टर, जिसमें भागे हुये कैदी हैं ? अभी पता चलता है।
चिड़िया आदमी, फेण्टम को खबर दो।
चिड़िया आदमी बम्बासी के ऊपर
बन्दूकें तैयार करो, गोली चलाओ साथियों।
??!
??!!
बम्बासी गांव के ऊपर धूल मिट्टी के साथ हैलीकॉप्टर उतरता है।
सब तरफ घेरा डालो।
??!!
जोको, चोर !
हां, तुमने मुझे देश निकाला दिया, मैंने प्रण किया कि मैं वापस आऊंगा, बदला लूंगा।
जंगली भाषा बन्द करो, सोना कहां है ?
जोको इनको बताओ कि हमारे पास इतनी गोलियां हैं कि इन सब लोगों को चिड़ियों की तरह मार सकते हैं।
!
धड़ाम !


जोको तुम इन बदमाशों के साथ वापस क्यों आये हो ?
सोने के लिये बुद्धू ।
तुम अपने ही लोगों को सोना चुराओगे जोको ।
अपने ही लोगों का··· मुझे तो देश निकाला दिया था ।
ड्रम वाले··· तुमने आदमी चिड़िया को देखा ।
हां, देखा और सुना, खूब शोर करती हुई इस तरफ गई···चलते फिरते भूत ।
FALK & BARRY 6/15
तारपीडो तुम और बो इन पर निगरानी रखो, जरा हिलें तो गोली मार देना ।
जोको···सोना कहां है ?
इधर ।
FALK & BARRY 6/16
मैंने सच बोला था न ।
अ: हा ।
···आदमी चिड़िया ?
बम्बासी की तरफ उड़ती हुई गई···चलते फिरते भूत ।
मैंने सच कहा था न कैंप ।
बम्बासी लोगों का खजाना ।
हाय सोना ।
FALK & BARRY 6/18
भारी है, जरा इधर से पकड़ो जोको ।
क्या हुआ जीको ?
अरं रं रं र·· वो निशान·· फैण्टम ?
तिजोरी पर फैण्टम का निशान, मतलब वह इसकी रक्षा कर रहा है ।
तो क्या हुआ जोको ? इधर से उठाओ ।
नहीं, छूने का मतलब ···मौत ?
अरे पागल ! तुम नहीं उठाओगे तो इसका मतलब मौत । मैं तुम्हें गोली मार दूंगा ।
तारपीडो, बो यह देखो सोना !
हाय राम !
कमाल है !
!!!!
FALK & BARRY 6/19
क्रमशः

दीवाना फ्रैंड्स क्लब



दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

पता: ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________________

____

पता ____________________

____

१. कुमार संभव अरोड़ा, मीना कटपीस सेन्टर सोमनाथ मन्दिर, पाली (राज.), २० वर्ष, तैरना, भ्रमण करना, पत्र-मित्रता उच्च साहित्य पढ़ना। २. आदित्य जयपति 'जैन' द्वारा श्री देवेन्द्र सिंह जैन, II/7 जिलाजज कम्पाउण्ड, आगरा, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, रेडियो सुनना, फिल्म देखना। ३. किशोर कुमार जैन, मुरली जनरल स्टोर्स गोल बाजार, बिलासपुर (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, फिल्म देखना, गाना गाना, पढ़ना। ` चन्द्र शेखर केशरी 'आजाद', रामनारायण प्रसाद श्रीकृष्ण प्रसाद, किशन गंज, (पूर्णियां), बिहार, २६ वर्ष, गीत सुनना, सिनेमा देखना। ५. गणेश कुमार जैन, नरपत गंज पूर्णियां, (बिहार), १६ वर्ष, पत्रिका पढ़ना, क्रिकेट कमेंट्री सुनना, अमिताभ बच्चन की फिल्म देखना। ६. मो० अकरम जुबेरी, न्यू लाइन वुडक आर्टिकल्स शिवपुरी मण्डी, सहारनपुर, १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्म देखना, कहानी पढ़ना। ७. एन० के० सिंह द्वारा नरेन्द्र डेविट, गली बावैयां, कपूरथला, २८ वर्ष, मित्रता करना, फिल्में देखना पुराने गीत सुनना। ८. महेश कुमार रामेश्वर दास अग्रवाल, मु० पो० देवरी, त० साकोली, जिला भंडारा, १७ वर्ष, खेलना उपन्यास पढ़ना, मित्रता करना, सोना। ९. मेंहदी हुसैन, पि० बनर्जी रोड, पो० मिहिजाम डमका, १४ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, पढ़ना। १०. राजेन्द्र लाल बास्के, ग्राम भादुडीह पो० पगदा भा० पटमदा, जिला सिंह भूम (बिहार), २० वर्ष, शिकार खेलना, कविता लिखना। ११. जयेश मिरानी, हीरा लाल मिरानी, खरसिया (म० प्र०), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, टेबल टैनिस खेलना। १२. खपन कुमार दास, बड़ा मिमडीह, पो० चाईबासा, जिला सिंह भूम, १९ वर्ष, पुरस्कार प्रतियोगिताओं में भाग लेना, रेडियो सुनना, मित्रता करना। १३. रवि शंकर धींगड़ा, इन्द्रा कालोनी, श्री गंगा नगर, १८ वर्ष, पढ़ना, गाने सुनना। १४. जय भगवान जय, उर्फ विवेक, २१८ हरीनगर आश्रम नई दिल्ली, १६ वर्ष, मित्रता करना, टिकट संग्रह। १५. श्रीराम चाण्डक, १८ 'अ' मोहन मार्केट, पो० गुवाहाटी (असम) १८ वर्ष, बुझी हुई बीड़ियां इकट्ठी करना, रोते हुए को हंसाना। १६. अरुण त्रिवेदी, ४-पुनिता पार्क, आंबावाडी, अहमदाबाद, २१ वर्ष, लिखना, झूठे रास्ते पर चल कर बर्बाद होने से बचाना। १७. राजमान शिल्पाकार, ६/५२३ टेबहाल काठमांडौ (नेपाल), २० वर्ष, पत्र-मित्रता, भ्रमण करना। १८. जय प्रकाश शर्मा, सूर्य इण्डिया, नई दिल्ली, २० वर्ष, पढ़ना और फोटो खींचना। १९. राम रतन मित्तल, रतनजी रोड, धनबाद, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, फिल्म देखना। २०. मनोहर होतवानी, बैरन बाजार, ईश्वर महल होली क्रास स्कूल के सामने (रायपुर), १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना, फिल्म देखना। सुरेश कुमार बुधवानी द्वारा लीलाराम किराना दुकान बैरन बाजार, रायपुर (म० प्र०), १६ वर्ष, सैर करना, फिल्म देखना। २२. हरजिन्द्र सिंह कालड़ा, प्लाट नं० १३ वार्ड न० ७ पानीपत, १७ वर्ष, बैड मिण्टन खेलना, पढ़ना। २३. कुंज बिहारी अग्रवाल, २/१ जवाहर नगर, जयपुर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, लिखना। २४. रविन्द्र कुमार मदान, गली नं० ७ नई आबादी अबोहर, १७ वर्ष, कहानियां पढ़ना, फोटो खींचना। २५. श्याम सुन्दर पंचारिया, ५० महावीर मार्केट, सोलापुर, २१ वर्ष, पत्र-मित्रता और बड़ों का आदर करना। २६. राजीव कुमार रवि द्वारा श्री आर० पी० राम सी० एम० पी० एफ० आफिस पो० बा० न० ५८ धनबाद, १६, वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता। २७. रमेश कुमार द्वारा देव फ्रेंड्स एण्ड लिसनर्स क्लबी जनौली, पलवल, १७ वर्ष, पढ़ना, फरमाइश भेजना। २८. सुरेश रामचन्द्र, तरानी भवानद वाच हाउस डी-४५ चण्डीगढ़, १७ वर्ष, फिल्म देखना, पुस्तक पढ़ना। २९. दयानन्द प्रसाद यादव, पो० बामुनी मैदान, आई० ई० गेस्ट हाउस गोहाटी, १६ वर्ष, सिनेमा देखना, गरीब से प्यार करना, गाना गाना। ३०. हकीकत राय गोभेजा, नानक राइस मिल के सामने, राम सागरपारा रायपुर, १६ वर्ष, सबसे प्यार करना पढ़ना। ३१. राजेन्द्र वर्मा 'परदेसी', नटराज फोटो स्टूडियो शहीद भगत सिंह मार्केट सरकूलर रोड, रोहतक, १७ वर्ष, सरदार बनना। ३२. शैलेन्द्र कुमार, छात्रावास सं-२ कमरा नं० ६२ मैडिकल कालिज कानपुर, २१ वर्ष, शतरंज खेलना, दोस्त बनाना। ३३. मोहन लाल लालानी, श्री राज चन्द कमरा नं० १६२, कन्धार, १६ वर्ष, खेलना और पढ़ना। ३४. छोमेन्द्र सिंह विराट, ग्राम भिकियासैंल, अलमोड़ा, १६ वर्ष, तैरना, पत्र-व्यवहार करना। ३५. गोकलेश कुमार, २/३ विष्णुपुरी, १८ वर्ष, संगीत बेमिसाल की सौहरत। ३६. तिलकराज मोटा द्वारा प्रकाश मैडिकल हॉल आर्य बाग हिसार, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता फिल्म देखना, घूमना।

तेज प्रैस, नया बाजार, [redacted] में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एंव प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक-विश्वबन्धु गुप्ता।

पृष्ठ४८से आगे

हर दिन चौबीस घण्टों के लिये'।

'जार के अन्दर के बीज बताओ।'

किराये पर लो और घूमो मोडर्न मोटर एजेंसी', मि० गणेश विज्ञापन को देखकर बोले, 'हाँ! तुम्हारा क्या मतलब है? तीस दिन तक कार बराबर तुम्हें प्रयोग करने दी गई, और हर दिन के चौबीस घंटे होते हैं बात खत्म।'

'मैं तो आपसे केवल विज्ञापन के शब्दों पर गौर करने को कह रहा हूं। इसमें लिखा है, जीतने वाला चौबीस घंटे के तीस दिन तक कार का प्रयोग कर सकता है।'

'बिलकुल ठीक' चिढ़कर मि० गणेश ने उत्तर दिया।' कार तुम्हारे प्रयोग में तीस दिन से है तथा हर दिन चौबीस घंटों का होता है, ये सबको अच्छी तरह मालूम है'।

'ठीक' मि० गणेश, सबको ही मालूम है एक दिन में चौबीस घटे होते हैं, फिर इसको लिखने की क्या आवश्यकता थी, ये कहना कि तीस दिन के लिये रोल्स रायस की सवारी जीतो' ही काफी होता।'

बौखलाकर मि० गणेश बोले 'मैं तो विज्ञापन को केवल अधिक आकर्षक बनाने का प्रयास कर रहा था।'

'हो सकता है', राजू बोला, 'परन्तु मेरे पढ़ने में तो ये ऐसे आता है कि जीतने वाला चौबीस-चौबीस घंटे के लिये, तीस बार कार का प्रयोग कर सकता है। और मेरे हिसाब से, किताब खोलकर उसने कुछ पढ़ा—हमने कार को केवल सत्तर घंटे और पैंतालिस मिनट प्रयोग किया है। इसलिये लगभग छब्बीस दिन हमारे प्रयोग के अभी बाकी हैं। मेरा मतलब चौबीस-चौबीस घटे के छब्बीस दिन!

महिन्दर और श्याम हैरानी से राजू को सुन रहे थे। हो नहीं सकता राजू ठीक है, परन्तु इस बात को ऐसे कहा अवश्य जा सकता है! आखिरकार प्रतियोगिता में लिखा था' २४—२४ घंटे के तीस दिन, फिर तो ठीक है।

राजू का ये तर्क सुनकर मि० गणेश हड़बड़ा गये और उनका मुंह एक दम लाल हो गया।

'बकवास! मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा था, कम से कम मैं ऐसा कहना तो बिलकुल नहीं चाहता था'।

'तभी तो सोच समझकर बोलना अति आवश्यक है'



राजू बोला, ख्याल रखना चाहिये कि वही कहो जो तुम्हारा मतलब हो। इस केस में तो आपने कहा ही था—'

'नहीं बिलकुल नहीं' मि० गणेश गुर्राये, यदि तुम्हारा विचार है तुम मेरी कार और ड्राइवर हमेशा मुफ्त प्रयोग कर सकते हो, तो तुम भूलते हो। मुझे कुछ परवाह नहीं मैंने क्या कहा था। तुम्हारा तीस दिन का समय पूरा हो गया 'बस'।

परन्तु हम एक सप्ताह के लिये शहर से बाहर गये हुए थे कम से कम उसे तो तीस दिन में जोड़ने की आज्ञा दे दीजिये।

मि० गणेश ने खीज कर कहा—'अच्छा केवल दो बार और तुम मेरी कार और ड्राईवर का प्रयोग कर सकते हो। इसके बाद मुझ से बिलकुल बात न करना। राजू ने उन्हें धन्यवाद दे कर कहा—एक वार कल सुबह साढ़े नो बजे-गाड़ी हमारे घर भेज दीजिये।'